01. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)

इतिहास (History)

- प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)
  - 1. पाषाण काल (Stone age)
    - पुरा पाषाण काल Palaeolithic Period
    - मध्य पाषाण काल Mesolithic Period
    - नवपाषाण काल Neolithic Period
  - 2. ताम्र पाषाण काल Chalcolithic Period
- आद्य ऐतिहासिक काल (Protohistoric Period)
  - सिंधु सभ्यता Indus valley civilization
  - कांसा Bronze
  - हड़प्पा Harappan
- ऐतिहासिक काल (Historical Period)
  - प्राचीन काल (Ancient Period)
  - मध्यकाल (Medieval Period)
  - आधुनिक काल (Modern Period)
  - नेहरू काल (Nehru Period)
  - विश्व (World)

☞ अतीत का अध्ययन **इतिहास** कहलाता है।

☞ इतिहास के जनक **हेरोडोटस** को कहते हैं।

☞ मानवजाति का पालना **अफ्रीका महादेश** को कहते है।

☞ जबकि सभ्यता का पालना **एशिया महादेश** को कहते है।

➢ **इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं–**

1. **प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)**– इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

1. पाषाण काल (Stone Age)

☞ वह समय जब मानव पत्थर के औजार एवं हथियार का उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।

☞ भारत में सर्वप्रथम 1863 ई० में **रार्बट ब्रुस फ्रुट** ने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की।

☞ भारतीय पुरातत्व का पिता सर **अलेक्जेंडर कनिंघम** को माना जाता है।

☞ भारत के पुरातात्विक संग्रहालय **इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय** (भोपाल) है जो संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।

☞ मिलने वाले धातु के आधार पर इतिहास का नामकरण **क्रिश्चयन थॉमस** ने किया।

☞ लिखावट के आधार पर नामकरण **जॉन ब्रूस** ने किया।

➢ **पाषाण काल को 3 भागों में बाँटा गया है–**

1. **पुरापाषाण काल (Palaeolithic Period) (20 लाख ई०पू० से 12,000 ई०पू० तक)**

☞ यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धी आग की खोज थी।

☞ इस समय मानव पत्थर के बड़े-बड़े औजारों का इस्तेमाल शिकार करने के लिए करते थे। इसी समय मानव ने चित्रकारी करना प्रारंभ किया।

☞ भीमबेटका के गुफाओं में **पुरा पाषाण काल** के चित्र देखने को मिलते हैं। जो मध्यप्रदेश के अब्दुलागंज (रायसेन) में स्थित है।

2. **मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) (12,000 ई०पू० से 10,000 ई०पू० तक)**

☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी **कार्ललाइल** ने 1867 ई० में दिया।

KHAN GLOBAL STUDIES
Best Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- ☞ यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे, इसलिए इन्हें **माइक्रोलिथ** कहते हैं। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्योश्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
- ☞ इसी काल में कश्मीर के बुर्ज होम से मानव के साथ-साथ कुत्ता को भी दफनाने का साक्ष्य मिला है।
- ☞ इसी काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (UP) के **सराय नाहर** तथा **महदहां** नामक स्थान से प्राप्त हुआ।

3. नव या उत्तरपाषाण काल (Neolithic Period) (10,000 ई०पू० से 3000 ई०पू० तक)–

- ☞ इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी सर जॉन लुबाक ने 1865 ई० में प्रस्तुत किया।
- ☞ इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में **पहिया** तथा **मनका (घड़ा)** की खोज की।
- ☞ कर्नाटक के मैसूर के पास संगनकल्लू नामक नवपाषाण कालीन पुरास्थल से **राख के टीले** प्राप्त हुए हैं।
- ☞ पशुपालन का साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (MP) तथा बागौर (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।
- ☞ मानव द्वारा पाला गया पहला पशु **'कुत्ता'** था।

Note :–

1. **मेहरगढ़–** यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में स्थित है। यहाँ से सर्वप्रथम 7000 ई० पू० सुलेमान और किरथर पहाड़ियों के बीच कृषि के साक्ष्य जौ एवं गेहूँ मिली थी।
2. **बुर्जहोम–** यह कश्मीर में अवस्थित है। यहाँ गर्तावास का प्रमाण मिला है। यहाँ से मालिक के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।
3. **कोल्डीहवा–** यह उत्तरप्रदेश के बेलनघाटी में स्थित है। यहाँ पर चावल का प्राचीनतम साक्ष्य (6000 ई० पू०) मिला है।
4. **चिरांद–** यह बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहाँ से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
5. **लहुरादेव–** यहाँ से सबसे नवीनतम प्राचीन चावल का साक्ष्य (9000 ई० पू०-7000 ई० के बीच) प्राप्त हुआ।

2. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period)

- ☞ यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय तांबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकीरण शुरू हो गया। इसी औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।

❒❒❒

02. आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History)

☞ इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सकता है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी के स्रोत भी पुरातात्विक साक्ष्य ही है। इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)

☞ यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं।
☞ इसका विकास **2500 ई० पूर्व** से **1750 ई० पूर्व** तक हुआ।
☞ सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार था।
☞ इसका क्षेत्र **13 लाख वर्ग किमी** में फैला था।
☞ सिन्धु सभ्यता में कुल **350 स्थल** मिले है जिसमें से **200 स्थल** केवल **गुजरात** में है।
☞ सिन्धु सभ्यता विश्व की पहली नगरीय (शहरी) सभ्यता थी जबकि विश्व की पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी जो ग्रामीण सभ्यता थी।
☞ सिंधु सभ्यता की जानकारी सबसे पहले **चार्ल्स मैशन ने (1826 ई०)** दिया था।
☞ सिंधु सभ्यता का सर्वेक्षण **जेम्स कनिंघम ने (1853 ई०)** किया।
☞ **लॉर्ड कर्जन** ने 1904 ई० में पुरातत्व विभाग की स्थापना किया था। जिसके महानिर्देशक सर जॉन मार्शल थे।
☞ सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई **दयाराम साहनी** ने की।
☞ इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड़प्पा में **(1921 ई०)** हुई थी। अत: इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
☞ सिंधु सभ्यता का नामकरण **जॉन मार्शल** ने किया था।
☞ इस सभ्यता को काँस्ययुगीन सभ्यता भी कहते है क्योंकि इसी समय काँसे की खोज हुई थी।

सिन्धु सभ्यता का विस्तार

1. इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाब नदी के तट पर थी। इसकी खुदाई जगपति जोशी ने 1982 ई० में किया।

2. इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिन्डन नदी के किनारे थी। यज्ञदत्त शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन हुआ।

3. इसकी दक्षिणी सीमा महाराष्ट्र के दैमाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी। यहाँ से धातु का एक रथ (इक्का गाड़ी) का प्रमाण मिला है।

4. इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुतकांगेडोर में थी, जो दाश्क नदी के तट पर थी।

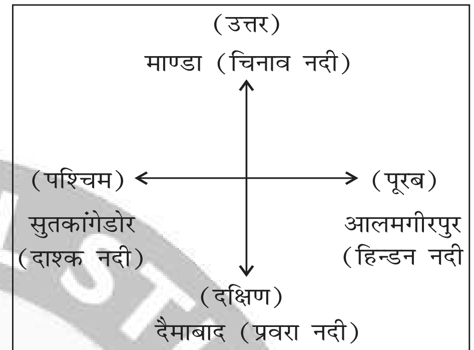

Trick :– सम = AD
डच – है पर (भारत में नहीं)

सम = AD	डच हैं पर ~~भारत में नहीं~~
स – सुतकांगेडोर	ड – दास्क
म – माण्डा	च – चिनाव
A – आलमीगीर	है – हिण्डन
D – दैमाबाद	पर – प्रवरा

हड़प्पा (1921)

☞ इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के ''माऊण्ट गोमरी'' जिला में स्थित है।
☞ पिग्गट ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**
(i) कुम्हार का चाक
(ii) श्रमिक आवास
(iii) अन्नागार
(iv) मातृदेवी की मूर्ति
(v) लकड़ी की ओखली
(vi) लकड़ी का ताबूत
(vii) R.H. 37 कब्रिस्तान
(viii) एक सिंग वाला जानवर
(ix) हाथी का कपाल
(x) स्वास्तिक चिन्ह
(xi) स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है)

Note :– चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही किए थे।

मोहनजोदड़ो (1922)

- इसकी खुदाई सन् 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थी जो सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण (ग्रीड पद्धति) पर काटती हुई नगर को वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थी।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) सूती वस्त्र
(ii) पुरोहित आवास
(iii) स्नानागार
(iv) अन्नागार (सबसे बड़ा)
(v) सबसे चौड़ी सड़क
(vi) सभागार
(vii) पशुपति शिव
(viii) काँसे की नर्तकी
(ix) ताँबे का ढ़ेर
(x) घर में कुआँ।

Note :– मोहनजोदड़ों का अर्थ होता है। मृतकों का टीला किन्तु यहाँ से कब्रिस्तान नहीं मिला है बल्कि एक ही स्थान पर कंकाल का ढेर मिला है। यह कंकाल क्षतिग्रस्त हैं जो बाह्य आक्रमण को दर्शाता है।

Note :– मोहनजोदड़ों का विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।

Remark :– सर्वाधिक स्वास्तिक मुहर मोहनजोदड़ों से मिला है। जिसका निर्माण सेलखड़ी से हुआ था।

सुतकांगेडोर (1927)

- इसकी खुदाई आर.एन. स्टाइन ने किया। यह सबसे पश्चिमी स्थल है जो दास्क नदी के किनारे है यहाँ से बंदरगाह मिले हैं।

चन्हुदड़ों (1931)

- इसकी खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की।
- यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- यह एक औद्योगिक शहर है।
- यह एक मात्र पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) सौंदर्य सामग्रियाँ
(ii) मनका
(iii) गुड़िया
(iv) सुई-धागा
(v) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता का पद चिह्न
(vi) अलंकृत ईंट

Note :– दड़ो या कोट शब्द वाले स्थान पाकिस्तान में पाये गए।

Ex :–

चन्हुदड़ों	वालाकोट
मोहनजोदड़ों	डावर कोट
जुरिद जोदड़ों	कोट दीजी

रोपड़ (1953)

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की । यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- इसका आधुनिक नाम रूपनगर है।
- यहाँ मानव के साथ-साथ उसके पालतू जानवरों (कुत्ता) का भी साक्ष्य मिला है।

Note : ऐसा ही शव नव-पाषाण काल में जम्मू-कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

बनावली (1973)

- इसकी खुदाई 1973 ई. में रविन्द्र सिंह ने किया। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण यहाँ नाली न मिलकर घरों में ही सोख्ता व्यवस्था मिला है।
- यहाँ की सड़के टेढ़ी-मेढ़ी थी अर्थात् सड़कें नगर को तारांकित (Star Shaped) भागों में विभाजित करती है।

कुणाल

- यह हरियाणा के फतेहबाद जिला में स्थित है।
- यहाँ से चांदी के दो मुकूट मिला है।

कालीबंगा

- इसका अर्थ होता है ''काले रंग की चुड़ियाँ''।
- यहाँ से अलंकृत ईंट, चूड़ी, जोता हुआ खेत, हल एवं हवन कुँड मिले है।
- यह राजस्थान में सरस्वती (घग्गर) नदी के किनारे हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
- इसकी खोज अलमानंद घोष द्वारा की गई।
- कालीबंगा के लोग एक साथ दो फसल उगाते थे। वहाँ एक ही खेत में चना और सरसों उपजाने का विवरण मिला है।
- इसकी खुदाई बी.के. थापड़ तथा बी.बी. लाल ने की।

धौलावीरा

- यह गुजरात में स्थित है।

- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- इसकी खुदाई सर्वप्रथम जे.पी जोशी (1967) ने किया एवं पुन: इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह बिस्ट द्वारा (1990-91) किया गया ।
- यह गुजरात तथा पाकिस्तान दोनों में फैला हुआ है।
- भारत में स्थित सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी था जो हरियाणा में है।

सुरकोटदा

- यह गुजरात में स्थित है।
- इसकी खुदाई जगपति जोशी ने करवाया।
- यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़े की हड्डी मिली है।
- यहाँ छोटे बंदरगाह भी मिले हैं।

लोथल

- इसकी खुदाई रंगनाथ राव ने भोगवा नदी के किनारे अहमदाबाद (गुजरात) में किया।
- यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- यहाँ से गोदीवाड़ा (Dock-yard) का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार का संकेत है।
- यहाँ से माप-तौल के समान भी मिले हैं।
- यहाँ से दिशा मापक यंत्र मिला है।
- यह एक औद्योगिक शहर था। इस शहर में घर के दरवाजें सड़कों की ओर खुलते थे।
- यहाँ से युगल शवाधान (जोड़े में लाश) के साक्ष्य मिले है, जिससे सतीप्रथा का आभास मिलाता है।

रंगपुर

- यह गुजरात में स्थित है।
- यहाँ से धान की भूसी मिली है।

सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- यहाँ की सड़क एक-दूसरे को समकोण पर काटती है तथा ये पूरब-पश्चिम दिशा में थी, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वत: साफ हो जाती थी।
- नगर नियोजन तथा जल निकास इसकी सबसे बड़ी व्यवस्था थी।
- इसकी नालियाँ ढ़की हुई थी तथा सड़क सीधी थी।
- अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इसका व्यापार विदेशों (अंतर्राष्ट्रीय) से होता था।
- इनकी भाषा भावचित्रात्मक थी।
- इनकी समाज मातृसतात्मक थी।
- इनकी लिपि दाएं से बाएं की ओर लिखा जाता था।
- हड़प्पा लिपि के प्रमाण से सबसे ज्यादा चित्र U आकार तथा मछली का चित्र देखने को मिलता है।
- इनके मुहरों पर सर्वाधिक एक सींग वाले जानवर का चित्र था।
- इनके मुहरों पर गाय तथा सिंह का चित्र नहीं मिला है।
- हड़प्पा सभ्यता के मुहरों में शेलखरी का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे जबकि अन्य धातु जैसे– सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, काँसा इत्यादि से परिचित थे।
- यहाँ माप-तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था जो दशमलव प्रणाली के सूचक हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- सिंधु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों में लाल रंग का उपयोग होता था।
- सिंधुवासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि भी करते थे, पशुपालन भी करते थे परंतु उनका मुख्य व्यवसाय व्यापार था।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिए चौपर और पासा खेलते थे।
- सबसे प्रिय देवता – शिव
- इनका पसंदीदा वृक्ष – पीपल
- इनका पसंदीदा जानवर – सांड़ तथा वृषभ (बसहा बैल)
- इनका पंसदीदा पक्षी – बत्तख
- इनका आदरणीय नदी – सिन्धु

> **सिंधु सभ्यता का समाज 4 वर्गों में बँटा हुआ था–**

1. विद्वान
2. योद्धा
3. व्यापारी एवं शिल्पकार
4. श्रमिक

वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?	वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?
सोना	अफगानिस्तान, ईरान, कर्नाटक	गोमेद	सौराष्ट्र
चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान	लाजवर्द	मोसोपोटामिया
ताँबा	ब्लूचिस्तान, खेतड़ी, ओमान	सीसा	ईरान
टिन	ईरान, अफगानिस्तान		

> **सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण–**

- सिंधु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।
- वर्तमान में हुए उत्खनन से आईआईटी खड़गपुर को सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित कुछ प्रमाण मिला जिस आधार पर कहा जा रहा है कि इसके पतन का महत्वपूर्ण कारण जलवायु परिवर्तन है।

मेसोपोटामिया की सभ्यता (10,000 ई.पू.)

- इसका विकास इराक में टिगरीस एवं यूफ्रेट्स (दजला-फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।
- यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।

03. ऐतिहासिक काल (Historical Period)

➢ **ऐतिहासिक काल :** इसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध है, और इसे पढ़ा भी जा सका है। इसके अंतर्गत वैदिक काल से लेकर अभी तक का समय आता है।

सिक्का (Coins)

☞ सिक्के का अध्ययन न्यूमेसमेटिक्स् कहलाता है।
☞ टेराकोटा का सिक्का मिट्टी का बना होता था। यह सिंधु सभ्यता में बना था।
☞ मौर्य काल के समय आहत या पंचमार्क सिक्के का प्रयोग होता था। आहत् सिक्कों पर लिखावट नहीं होती थी। केवल चित्र बने होते थे। यह पहला धातु का सिक्का था।
☞ पण चाँदी के सिक्के थे, जो मौर्य काल में प्रचलित थे।
☞ सीसा का सिक्का सातवाहन काल में प्रचलित था।
☞ पहली बार सोने का सिक्का यूनानी शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
☞ शुद्ध सोने का सिक्का कुषाण शासको द्वारा प्रचलित किया गया।
☞ सर्वाधिक मात्रा में तथा सबसे अधिक अशुद्ध सोने का सिक्का गुप्त काल में प्रयोग हुआ। इस समय शासक स्कन्दगुप्त था।
☞ चाँदी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
☞ राजा-रानी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-I के समय प्रचलित हुआ।
☞ मयूर शैली की सिक्का गुप्त काल में समुद्र गुप्त के समय प्रयोग में लाया गया। इस सिक्के का सर्वाधिक प्रचलन गुप्त काल में था।
☞ कौड़ी का प्रयोग भी गुप्त काल में ही हुआ।
☞ चमड़े का सिक्का हुमायूं के शासन काल में शिहाबुद्दीन ने प्रारम्भ करवाया था।
☞ चांदी के रुपये का प्रारंभ शेरशाह सूरी ने किया।
☞ तांबे के दाम का प्रारम्भ शेरशाह सूरी ने ही किया।
☞ सोने की अशर्फी का प्रारम्भ भी शेरशाह सूरी ने ही किया।

वेद

☞ वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' होता है। यह सबसे प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है।

	वेद	ज्ञानी	ब्राह्मण ग्रन्थ	उपवेद	ज्ञानी
1.	ऋग्वेद	होतृ	कौशतकीय, एतरेय	आयुर्वेद	प्रजापति
2.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	तैतरेय, शतपथ	धनुर्वेद	विश्वामित्र
3.	सामवेद	उद्गाता	पंचवीश	गंधर्ववेद,	नारद
4.	अथर्ववेद	ब्रह्मा	गोपथ	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

☞ वेद-वेदों की रचना ईश्वर ने की है। अत: वेद को अपौरूषेय कहा जाता है।
☞ गुप्तकाल में कृष्ण द्वैवायन व्यास ने वेदों का संकलन (Collection) किया।
☞ प्रारम्भ में वेदों की संख्या- 3 (ऋग्वेद, यजुर्ववेद तथा सामवेद) थी, अत: वेद को त्रयी कहा जाता है।
☞ अथर्ववेद को बाद में शामिल किया गया इसलिए इसे वेदत्रैयी में नहीं रखते हैं।

1. ऋग्वेद

☞ इसका शाब्दिक अर्थ मंत्रों/ऋचाओं का संग्रह होता है। इसमें 10 मंडल, 1028 सुक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं। ऋचाओं की अधिकता के कारण ही इसे ऋग्वेद कहते हैं।
☞ यह सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री मंत्र की चर्चा है, जो सूर्य भगवान को समर्पित है।
☞ पहली बार शूद्र का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ।
☞ ऋग्वेद का पहला तथा 10वां मंडल बाद में लिखा गया है जबकि सबसे पहले 7वाँ मंडल लिखा गया है।
☞ 9वें मंडल में सोम देवता की चर्चा है। यह जंगल के देवता थे।
☞ ऋग्वेद के ज्ञानी को होतृ कहते हैं।
☞ ऋग्वेद का उपवेद 'आयुर्वेद' है। जिसमें चिकित्सा की चर्चा है। इसके ज्ञानी को प्रजापति कहते हैं।
☞ इसमें दसराज्ञ युद्ध की चर्चा है।

2. यजुर्वेद

☞ इसमें 1990 मंत्र हैं। इसमें युद्ध एवं कर्म-कांड की चर्चा है।
☞ यह एकमात्र वेद है जो गद्य और पद्य दोनों में है।
☞ **इसे 2 भाग में बाँटते हैं–**
(i) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
(ii) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
☞ इसके ज्ञानी को अध्वर्यु कहते हैं। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। धनुर्वेद के ज्ञानी को विश्वामित्र कहते हैं।

3. सामवेद

☞ साम का शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। इसमें 1549 मंत्र हैं। किन्तु वास्तव में 75 मंत्र ही सामवेद के हैं। बाकी मंत्रों को ऋग्वेद से ग्रहण किया गया है।

- सामवेद में भारतीय संगीत के सात स्वर सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी की चर्चा है।
- ये संगीत यज्ञ के समय गाये जाते हैं।
- सामवेद के ज्ञानी को 'उद्गाता' कहते हैं।
- सामवेद का उपवेद 'गंधर्ववेद' है।
- गंधर्ववेद के ज्ञानी को 'नारद' कहते हैं।
- भारतीय संगीत का जन्म 'सामवेद' से हुआ है।

4. अथर्ववेद

- इसकी रचना सबसे बाद में उत्तर वैदिक काल में हुई। इसमें 5849 मंत्र तथा 731 सूक्त हैं।
- इसमें जादू-टोना, वशीकरण, रोग-निवारक औषधि, इत्यादि की चर्चा है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद है।
- अथर्ववेद के ज्ञानी को ब्रह्मा कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि ने इस वेद को लिखा है।
- अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम मगध, अंग और राजा परिक्षित के बारे में उल्लेख किया गया है।

उपवेद

- वेदों को अच्छी तरह से समझने के लिए उपवेद की रचना किया गया। सभी वेद के अपने-अपने उपवेद है।
  1. **आयुर्वेद**- ऋग्वेद का उपवेद है।
  2. **धनुर्वेद**- यजुर्वेद का उपवेद है।
  3. **गंधर्ववेद**- सामवेद का उपवेद है।
  4. **शिल्पवेद**- अथर्ववेद का उपवेद है।

➤ **आरण्यक**

- वैसी पुस्तक जिसकी रचना जंगल में की गई हो, आरण्यक कहलाता हैं। इसकी संख्या 7 है।
- अथर्ववेद को छोड़कर सभी पुस्तक आरण्यक हैं।

वेदांग

- वेदों को भलि-भाँति समझने के लिए वेदांग की रचना की गई।

➤ **वेदांग की संख्या 6 हैं–**

ब्याजो **निशि** **कछ**

व्याकरण ज्योतिष निरूक्त शिक्षा कल्प छंद

व्याकरण	=	व्याकरण (वेद के मुख)
ज्योतिष	=	खगोल विज्ञान (वेद की आंखे)
निरूक्त	=	निरूक्त शास्त्र (वेदों का कान)
शिक्षा	=	शिक्षा शास्त्र (वेद का मस्तिष्क)= उच्चारण का विज्ञान
कल्प	=	कल्प शास्त्र (कर्मकांड का प्रतिपादन)
छंद	=	छंद शास्त्र (वेद मंत्रों के सही-सही उच्चारण)

- व्याकरण की पहली पुस्तक पाणिनी की अष्टाध्यायी थी।
- ज्योतिष की सबसे बड़ी पुस्तक महाभाष्य है।
- निरूक्त की रचना यास्क महोदय ने किया। जिसका अर्थ निर्वचन होता है अर्थात् वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझना ही निरूक्त का प्रयोजन है।
- गौतम ऋषि ने कल्प की रचना किया।
- वेद-वेदांग पढ़ाने वाले अध्यापक को उपाध्याय कहते हैं।

पुराण

- इसकी रचना महर्षि लोमहर्ष तथा इनके पुत्र उग्रश्रवा ने किया। इसकी संख्या 18 है।
- इसे पाँचवा वेद या वेदों का वेद कहते है।
- इससे प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है।
- स्त्री और शूद्र को इसे पढ़ने की अनुमति नहीं थी। वे इसे सुन सकते थे।

➤ **विष्णु पुराण–** इससे मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।

➤ **मत्स्य पुराण–** इससे सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है। इसमें विष्णु भगवान के 10 अवतारों की चर्चा है।

➤ **वायु पुराण–** इसमें गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इसमें लिखा है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा तीन समुद्र का पानी पीता था।

उपनिषद्

- इसका अर्थ होता है, गुरू के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। यह ब्राह्मणों के विरुद्ध राजपूतों की एक प्रक्रिया मानी जाती है।
- उपनिषद् 108 हैं, किन्तु 13 उपनिषद् को ही मान्यता प्राप्त है।

➤ **वृहद् नारायण उपनिषद्–** यह सबसे बड़ा तथा प्राचीन है।

➤ **कठोपनिषद–** इसमें यम एवं नचिकेता की चर्चा है। इसमें 'ऊँ' शब्द के महत्व को दर्शाया गया है।

➤ **मुंडकोपनिषद्–** इसमें 'सत्यमेव जयते' की चर्चा है।

➤ **श्वेताश्वरूपनिषद्–** इसमें सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की चर्चा है।

➤ **जबालोपनिषद्–** इसमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अर्थात् त्रिमूर्ति की चर्चा है। सर्वप्रथम 4 आश्रमों के बारे में उल्लेख इसी उपनिषद् में किया गया है।

➤ **अलोपनिषद्–** यह सबसे बाद का उपनिषद है। इसकी रचना अकबर के काल में हुई।

Note : - उपनिषद् मूलत: दर्शन पर आधारित है।

- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद्- काठोपनिषद्, मैत्रायत्री और श्वेताश्वरूपनिषद्।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद्- छांदोग्य तथा जैमिनीय।
- अथर्ववेद के प्रमुख उपनिषद्- मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् तथा मांडुक्योपनिषद्।

प्रमुख साहित्य

- स्मृति साहित्य में प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है। स्मृति साहित्य की संख्या 36 हैं जिनमें से विष्णु स्मृति तथा नारद स्मृति से गुप्त काल की जानकारी मिलती है।

- ☞ मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति से मौर्य काल की जानकारी मिलती है।
- ☞ याज्ञवल्क्य स्मृति में जुआ खेलने को उचित बताया गया।
- ☞ मनुस्मृति को धर्म शास्त्र कहते हैं। इसमें ऊँची जाति को वरीयता दी गई है। दलित तथा महिला को नीचे दिखाया गया है।
- ☞ इसमें विवाह के लिए पुरुष की आयु 25 वर्ष तथा लड़की की आयु 12 वर्ष बताया गया है।
- ☞ इसमें 8 प्रकार के विवाह की चर्चा है।
- ☞ संस्कार की संख्या 16 होती है।
- ☞ गर्भाधान प्रथम संस्कार होता है।
- ☞ अंत्येष्टि (दाह संस्कार) अंतिम संस्कार होता है।

महाकाव्य

➢ **महाकाव्य की संख्या 2 है–**

1. रामायण
2. महाभारत

1. रामायण

- ☞ इसकी रचना महर्षि वाल्मिकि ने की। प्रारम्भ में इसमें 12000 श्लोक थे, किन्तु वर्तमान में 24000 श्लोक हैं। इसे गुप्तकाल में पुरा किया गया था। इसमें 7 कांड हैं।
- ☞ अकबर के समय रामायण को फारसी भाषा में अनुवाद बदायूनी ने किया।
- ☞ इसे आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है।
- ☞ रामायाण महाकाव्य महाभारत की अपेक्षा अधिक ठोस है।

2. महाभारत

- ☞ यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसकी रचना वेदव्यास ने की। इसका प्रारम्भिक नाम जयसंहिता था। प्रारंभ में 8800 श्लोक थे।
- ☞ वर्तमान में एक लाख श्लोक है अब इसे शतसाहस्री संहिता अर्थात् महाभारत कहते हैं।
- ☞ महाभारत में कथोप कथाओं के साथ उपदेश भी हैं।
- ☞ महाभारत के खंडों को पर्व कहा जाता है। इसमें कुल 18 पर्व है। सबसे महत्वपूर्ण पर्व भीष्म पर्व है। जिसमें अर्जुन तथा कृष्ण के वार्तालाप की चर्चा है। भीष्म-पर्व को भागवत् गीता या गीता कहा जाता है।
- ☞ अकबर के समय महाभारत को फारसी भाषा में रज्जनामा के नाम से अनुवाद किया गया था।

वैदिक काल

- ☞ इस काल में वेदों की रचना की गई। अत: इसे वैदिक काल कहा गया। यह पूर्णत: ग्रामीण सभ्यता थी।
- ☞ वैदिक काल 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक था।

➢ **संक्रमण काल**- सिंधु सभ्यता का पतन 1750 ई. तक हो गया। इसके बाद अगले 250 साल में धीरे-धीरे वैदिक सभ्यता का विकास प्रारंभ हुआ। इसी 250 साल को संक्रमण काल कहते है।

➢ **वैदिक काल को 2 भागों में बाँटते हैं-**

वैदिक काल (1500 BC - 600 BC)

↓ ऋग्वैदिक काल (1500 BC -1000 BC)

↓ उत्तर वैदिक काल (1000 BC - 600 BC)

➢ **ऋग्वैदिक काल**- इस समय जाति का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था। यह काल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक था।

➢ **उत्तर वैदिक काल**- इसका विकास 1000-600 ई. पू. तक हुआ। इस काल में जाति का निर्धारण वंश के आधार पर होने लगा।

- ☞ उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हुई।
- ☞ भारत में लोहे का प्रचलन पहली बार 1000 ई. पूर्व में आरम्भ माना जाता है।
- ☞ वर्तमान में भारत में लोहे का पहला साक्ष्य अतिरंजीखेड़ा में देखने को मिलता है।
- ☞ वैदिक समाज के निर्माता आर्य थे।
- ☞ आर्य मध्य एशिया (मैक्समूलर) से आए थे और भारत में सप्त सैंधव प्रदेश में (सात नदियों का प्रदेश या पंजाब, हरियाणा) बस गए।
- ☞ आर्यों की भाषा संस्कृत थी जो देवताओं की भाषा थी, जिस कारण आर्य स्वयं को श्रेष्ठ कहते थे। जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी, अर्थात् भारत में मूल निवासियों को अनार्य या निम्न कहा जाता था।
- ☞ दक्षिण भारत का आर्यीकरण अगस्त ऋषि ने किया।
- ☞ उत्तर भारत का आर्यीकरण राजा विदेह के पुरोहित (पंडित) गौतम राहूगण ने किया। किन्तु ये गंगा नदी को पार करके पटना नहीं पहुँच पाए जिस कारण अथर्ववेद में पाटलीपुत्र को अछूतों की भूमि कही गई है और यहाँ के गंगा जल को पवित्र नहीं माना गया है।
- ☞ इस समय सबसे प्रिय पशु गाय थी। जो समृद्धि का संकेत थी। गाय की हत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- ☞ राजा का मुख्य कार्य गाय के लिए युद्ध करना (गविष्टि) था। उस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- ☞ पुरुष्णी नदी (रावी) के तट पर आर्य तथा अनार्य राजाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में आर्य विजयी हुए। इस युद्ध को दशराज्ञ का युद्ध भी कहते हैं। इसकी चर्चा ऋग्वेद के 7वें मंडल में है।
- ☞ आर्यों के विजयी होने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम आर्यावर्त पड़ा। आर्यों में सबसे महान राजा भरत था। जिसके नाम पर आर्यावर्त का नाम भारत रखा गया।

वैदिक काल की वर्ण व्यवस्था

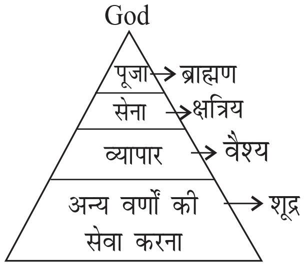

➢ **वैदिक काल में समाज को चार वर्गों में बांटा गया–**

1. **ब्राह्मण–** ये पूजा-पाठ तथा शिक्षा-दीक्षा का कार्य करते थे। इनकी संख्या सबसे कम थी।
2. **क्षत्रिय-** ये रक्षा का कार्य करते थे अर्थात् सैनिक होते थे। इनकी संख्या वैश्य से कम थी।
3. **वैश्य (व्यवसाय)–** ये व्यवसाय करते थे। इनकी संख्या शूद्र से कम थी।
4. **शूद्र–** ये दूसरों के यहाँ सेवा करते थे अर्थात् नौकरी करते थे। इनकी संख्या सर्वाधिक थी।

वैदिक काल की नदियाँ

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
सिन्धु	सिन्धु
वितस्ता	झेलम
आस्किनी	चिनाब
पुरुष्णी	रावी
शतुद्री	सतलज
विपाशा	व्यास
सदानीरा	गंडक

☞ वैदिक साहित्य में सर्वाधिक चर्चा सिंधु नदी की है क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

वैदिक काल के देवता

(i) **इन्द्र–** यह सबसे महत्वपूर्ण थे। इसकी चर्चा 250 बार हुई है। इन्हें युद्ध तथा वर्षा का देवता कहते हैं। इन्हें पुरंदर भी कहते हैं।

(ii) **अग्नि–** इसकी चर्चा 200 बार की गई है।

(iii) **वरूण–** वायु के देवता।

(iv) **सोम–** जंगल के देवता।

(v) **मारूत–** तूफान के देवता।

(vi) **रुद्र–** यह सबसे क्रोध वाले देवता थे। इन्हें पशुओं की देवता कहते हैं।

(vii) **विष्णु–** संरक्षक एवं पालनकर्ता।

➢ **गविष्टि का अर्थ होता है–** गाय के लिए किया गया युद्ध।

➢ **सीता का अर्थ होता है–** हल से जोती गई जमीन पर पड़ा निशान।

वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

☞ इस समय सबसे बड़ा पद राजा का होता था। जिसे जनता चुनती थी। राजा किसी भी निर्णय को लेने से पहले विभिन्न समितियों में बैठकर इसकी चर्चा करता था।

➢ **वैदिक काल में तीन प्रमुख संगठन थी–**

(i) **सभा–** यह निम्न साधारण लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 8 बार की गई है।

(ii) **समिति–** यह उच्च वर्ग के लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 9 बार हुई है।

(iii) **विद्थ–** यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था। इसकी चर्चा 122 बार हुई है।

Note :– सभा तथा विद्थ में भाग लेने की अनुमति महिलाओं को भी थी।

☞ वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसके मालिक को ग्रामिक कहते थे।

☞ सबसे बड़ी इकाई जन होती थी, जिसके मालिक को राजन कहते थे।

➢ **वैदिक काल में षष्ठ् दर्शन दिए गए–**

(i) **सांख्यदर्शन** – कपिल
(ii) **न्याय दर्शन** – गौतम
(iii) **योग दर्शन** – पतंजलि
(iv) **वैशेषिक दर्शन** – कणाद
(v) **उत्तर मीमांसा** – वादरायण
(vi) **पूर्वी मीमांसा** – जैमिनी

Note :– गौतम बुद्ध के अधिकतर उपदेश सांख्यदर्शन से लिए गए हैं।

➢ **सिंधु सभ्यता तथा वैदिक संस्कृति में अंतर–**

☞ उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हो जाने के कारण कृषि तथा अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगा और समाज धीरे-धीरे ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर अग्रसर होने लगा। जन का आकार बढ़कर जनपद हो गया और यह जनपद आगे चलकर महाजनपद का रूप ले लिया।

☞ उत्तर वैदिक काल में जब अतिरंजीखेड़ा से लोहे की खोज हुई, तो उत्तर वैदिक काल की अर्थव्यवस्था पशुपालन के स्थान से कृषि पर आधारित हो गई।

☞ महाजनपद का काल सिन्धु सभ्यता के बाद दूसरी नगरीय सभ्यता थी।

☞ भारत में कुल 16 महाजनपद हुए हैं जिसकी चर्चा बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवति सूत्र में है।

☞ 16 महाजनपद में सबसे समृद्ध तथा सबसे शक्तिशाली महाजनपद, मगध था।

☞ वैदिक काल में कर को बलि कहते थे, जबकि देवताओं को खुश करने के लिए पशु बलि दी जाती थी।

04. जैन धर्म
(Jainism)

- ☞ 6वीं शताब्दी ई.पू. में, भारत में कुल 72 संप्रदायों का विकास हुआ, जिसमें जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक संप्रदाय, लिंगायत, कापालिक, शैव धर्म और वैष्णव धर्म प्रमुख हैं।
- ☞ जैन शब्द संस्कृत के 'जीन' शब्द से बना है। जिसका अर्थ विजेता होता है।
- ☞ जैन धर्म का मुख्य केन्द्र बिन्दु 'अहिंसा' था।
- ☞ इस धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे।
- ☞ जैन धर्म के प्रवर्तक को तीर्थंकर कहा जाता है।
- ☞ तीर्थंकर का अर्थ होता है, दु:ख से परे संसार रूप सागर को पार कराने वाला।
- ☞ जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किए।
- ☞ ऋषभदेव जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे।
- ☞ ऋषभदेव हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किए थे।
- ☞ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर तथा बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- ☞ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।
- ☞ इनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहाँ हुआ था जो इच्छवाकु वंश से संबंधित थे।
- ☞ इन्हें झारखण्ड के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस कारण सम्मेद शिखर का नाम पारसनाथ की चोटी हो गया।

➤ **ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने चतुरायण धर्म दिया जो निम्नलिखित है–**

(i) झूठ न बोलना। (Non Lying) = सत्य
(ii) धन संग्रह न करना। (Non Possession) = अपरिग्रह
(iii) चोरी न करना। Astey (Non Stealing) = अस्तेय
(iv) हिंसा न करना। (Non Injury) = अहिंसा

- ☞ जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर एवं अंतिम तीर्थंकर **महावीर स्वामी** हैं। इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- ☞ इनके पिता सिद्धार्थ थे, जो ज्ञातृक कुल के राजा थे।
- ☞ इनकी माता त्रिशला थी। जो लिच्छिवी नरेश चेतक की बहन थी। इनके बड़े भाई नंदिवर्धन थे।
- ☞ इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- ☞ इनका जन्म 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।
- ☞ इनकी पत्नी यशोदा तथा इनकी बेटी प्रियदर्शनी (अन्नोज्जा) एवं दामाद जमालि था।
- ☞ 30 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग दिए।
- ☞ 12 वर्ष के कठोर तपस्या के बाद जाम्भिक ग्राम में एक साल वृक्ष (बरगद) के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति को ''कैवल्य'' कहते हैं।
- ☞ ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें कैवलीन, जिन या निग्रोध कहा गया। जीन का अर्थ होता है, विजेता जबकि निग्रोध का अर्थ होता है, बंधन से मुक्ति।
- ☞ वर्तमान में जाम्भिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पारसनाथ की पहाड़ी तथा ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर नदी के रूप में किया जाता है।
- ☞ इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में बितुलाचल पहाड़ी पर बराकर नदी के तट पर प्राकृत (अर्द्धमगही) भाषा में दिया था। जबकि अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- ☞ महावीर स्वामी का पहला भिक्षु उनका दामाद जमाली बना।
- ☞ प्रथम जैन भिक्षुणी चम्पा थी। जो राजा दधिवाहन की बहन थी।

➤ **ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने पारसनाथ द्वारा प्रारंभ चतुरायन धर्म में ब्रह्मचर्य शब्द जोड़कर पंचायन धर्म दिया जो निम्नलिखित हैं–**

जैन धर्म के पंचायन धर्म		
1.	अहिंसा	जान-बूझकर या अनजाने में भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना।
2.	सत्य	सदा सत्य बोलना।
3.	अस्तेय	किसी व्यक्ति की कोई वस्तु बिना उसकी इच्छा के ग्रहण नहीं करना न ऐसी कोई इच्छा करना।
4.	अपरिग्रह	किसी प्रकार का संग्रह नहीं करना।
5.	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य व्रत का सख्ती से पालन करना।

जैन धर्म की पाँच श्रेणियाँ		
1.	तीर्थंकर	वह जिसने मोक्ष की प्राप्ति की हो।
2.	अर्हत	वह जो निर्वाण की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।
3.	आचार्य	जैन-भिक्षुओं के समूह का प्रमुख
4.	उपाध्याय	जैन धर्म का शिक्षक
5.	साधु	सारे जैन-भिक्षु

➤ **महावीर स्वामी ने त्रिरत्न दिए जो निम्नलिखित हैं–**

(i) सम्यक् ज्ञान (Right knowledge)
(ii) सम्यक् दर्शन (Right believe)
(iii) सम्यक् आचरण (Right action)

- ☞ भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों के प्रचार-प्रसार के लिए एक संघ की स्थापना किए जिसमें 11 अनुयायी थे।
- ☞ महावीर स्वामी ने ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जिस कारण वे मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किए। अत: इन्हें अनेश्वरवादी भी कहा जाता है।

- इन्होंने पुनर्जन्म को माना और पुनर्जन्म का सबसे बड़ा कारण आत्मा को बताया। आत्मा को सताने के लिए इन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के बाद पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाएगी।
- महावीर स्वामी ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया, जिस कारण उन्होंने कृषि तथा युद्ध पर प्रतिबंध लगा दिए।
- 72 वर्ष की अवस्था में 468 ई.पू. पावापुरी में मल्ल राजा सृष्टिपाल के दरवार में इनकी मृत्यु (निर्वाण) हो गई।
- पावापुरी उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था। जिसका शासक सृष्टिपाल था।
- महावीर स्वामी के दिए गए उपदेशों को चौदह पूर्वी नामक पुस्तक में रखा गया जो जैन धर्म की सबसे प्राचीन पुस्तक है।
- महावीर स्वामी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
- महावीर ने अपने उपदेश में अनेकांतवाद की चर्चा की।
- महावीर स्वामी के बाद प्रथम उपदेश देने वाला आर्यसूधर्मा को घोषित किया गया था।
- भद्रबाहु तथा स्थूलभद्र इनके दो सबसे प्रिय अनुयायी थे।
- मौर्य काल में मगध में 12 वर्षीय भीषण अकाल पड़ा जिस कारण भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में कर्नाटक चले गए। इन्हीं के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य भी आये थे। जिसने कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में संलेखना (संथारा) से प्रथा से प्राण त्याग दिये।
- इस भीषण अकाल में भी स्थूलबाहु तथा उसके अनुयायी मगध में ही रूके रहे। जब अकाल खत्म हो गया तो भद्रबाहु मगध लौट आया। किन्तु इन दोनों में विवाद हो गया।
- भद्रबाहु के नेतृत्व वाले लोग निर्वस्त्र रहते थे, जिन्हें दिगम्बर कहा गया।
- जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाले लोग श्वेत वस्त्र धारण करने लगे। जिसे श्वेताम्बर कहा गया।
- जैन धर्म के विस्तृत प्रचार के लिए 2 जैन संगीतियाँ हुई हैं।

➢ **पहली जैन संगीति**

- यह 300 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने किया। उसी में भद्रबाहु ने 12 अंग नामक पुस्तक की रचना की।

Note :–दक्षिणी जैन दिगम्बर ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।

➢ **द्वितीय जैन संगीति**

- यह छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी में हुई। उसकी अध्यक्षता देवाधिक्षमाश्रमण ने किया। उसी संगीति में 12 उपांग की रचना की गई।
- जैन भिक्षु के निवास को वसदे कहा गया है।
- अनुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- स्यादवाद, अनेकांतवाद, सप्तभंगी ज्ञान, जीन, निग्रोध, तीर्थंकर, कैवल्य सभी का संबंध जैन धर्म से है।
- महावीर के संकालीन शासक बिम्बिसार, चन्द्रप्रद्योत, अजातशत्रु, दधिवाहन तथा चेटक थे।
- जैन धर्म मानने वाला प्रमुख राजा- अजातशत्रु, उदयिन, वादराज, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, राष्ट्रकूट, अमोघवर्ष, चंदेल शासक।
- जैन मंदिर हाथी सिंह गुजरात राज्य में स्थित है।
- प्रसिद्ध जैनी जलमंदिर बिहार राज्य के पावापुरी में स्थित है।
- मथुरा कला का संबंध जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिंदू धर्म से है।
- जैन धर्म सर्वाधिक व्यापारी वर्ग के बीच फैला था।
- महावीर के अनुयायियों को निग्रंथ के रूप में जाना जाता था।
- महावीर के मुख्य शिष्य को गंधर/गंधर्व कहा जाता था।
- जियो और जीने दो महावीर स्वामी का कथन है।
- जैन धर्म को अन्तिम राजकीय संरक्षण गुजरात के चालुक्य वंश के राजाओं ने दिया था।
- महावीर एक गाँव में एक दिन से अधिक तथा एक शहर में 5 दिन से अधिक नहीं रहते थे।

➢ **जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ**

- यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

उदाहरण– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।

➢ **अचरांग सूत्र**

- इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।

➢ **भगवति सूत्र**

- इसमें महावीर के जीवन तथा 16 महाजनपद की चर्चा है।

➢ **न्यायधम्मकहा सूत्र**

- महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।
- जैन साहित्य को आगम कहते हैं।
- जैन तीर्थंकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है। जो संस्कृत भाषा में है।

प्रमुख जैन मंदिर

1. मौर्यकाल में मथुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

2. कर्नाटक में चामुंड शासकों ने गोमतेश्वर का जैन मंदिर बनवाया जिसे बाहुबली का मंदिर कहते हैं।

3. मध्यप्रदेश में चंदेल शासकों ने खजुराहों में जैन मंदिर बनवाया। जिसमें बाहुबली की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) है।

Note :– खजुराहों हिन्दु और जैन दोनों का पवित्र स्थल है। जबकि अजंता बौद्ध, जैन और हिन्दु तीनों का पवित्र स्थल है।

4. राजस्थान में माऊंट आबु पहाड़ी पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर, विमलशाह के सामंत (अधिकारी) वस्तुपाल तथा तेजपाल के द्वारा बनाया गया है।

➢ **प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह**

क्र.सं.	प्रमुख जैन तीर्थंकर	चिह्न
1.	ऋषभदेव	बैल
2.	अजीतनाथ	हाथी
3.	संभवनाथ	अश्व
6.	पद्मप्रभू	कमल
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
19.	मल्लिनाथ	कलश
21.	नेमिनाथ	नीलकमल
22.	अरिष्टनेमि	शंख
23.	पारसनाथ	सर्प
24.	महावीर स्वामी	सिंह

05. बौद्ध धर्म (Buddhism)

- बौद्ध धर्म का प्रारंभ महात्मा बुद्ध ने किया था।
- महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
- इनका जन्म 563 ई.पू. में नेपाल के लुम्बनी (कपिलवस्तु) में हुआ।
- इनके पिता सुद्धोधन क्षत्रिय (शाक्य गण के प्रधान) थे।
- इनकी माता महामाया कोलीय वंश की थी।
- जन्म के सात दिन बाद महामाया की मृत्यु हो गई।
- इनकी मौसी गौतमी ने इनका पालन पोषण किया। गौतमी इनकी सौतेली माँ भी थी।
- इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा (गोपा/ बिम्बा/ भदकच्छना) नामक अति सुंदर स्त्री से हुआ।
- इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- सिद्धार्थ को तथागत, कनकमुनि, शाक्यमुनि भी कहते है।
- इन्हें एशिया का ज्योतिपुंज (Light of Asia) भी कहा जाता है।
- एक दिन इन्होंने अपने राज्य में नगर भ्रमण के दौरान वे चार अवस्थाओं- बीमार व्यक्ति, वृद्ध व्यक्ति, शव तथा एक सन्यासी को देखा। जिसके कारण इनके मन में वैराग्य (गृह त्याग) की इच्छा उत्पन्न हो गई और ये 29 वर्ष की आयु में अपना गृह त्याग दिए। जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया।
- इन्होंने अलारकलाम से सांख्य दर्शन (वैशाली में) तथा रूद्रकराम (राजगृह में) से योग दर्शन की शिक्षा ग्रहण किए।
- महात्मा बुद्ध अपने पाँच मित्रों के साथ सारनाथ के मृगदाब वन में तपस्या करने लगे। 6 वर्ष तक कठोर तपस्या किए।
- वहां एक कन्या ने इनसे कहा कि- वीणा को इतना न खींचो कि वह टूट जाए और इतना कम भी न खींचो कि वह बजे ही नहीं। इस बात को सुनकर महात्मा बुद्ध सारनाथ से गया (उरूबेला) चले आए और तपस्या करने लगे।
- यहाँ इन्हें निरंजना (फाल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वह वृक्ष महाबोधि वृक्ष कहलाया तथा यह स्थान बोधगया कहलाया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें महात्मा बुद्ध कहा गया।
- बुद्ध का शाब्दिक अर्थ ''ज्ञान संपन्न व्यक्ति'' होता है।
- इन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ में अपने मित्रों को दिया। जिसे बौद्ध धर्म में महाधर्म चक्रप्रर्वतन कहते हैं।
- इन्होंने सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिया जोकि पाली भाषा में दिया था।
- इन्होंने श्रावस्ती में अंगुलीमाल नामक डाकू को शिक्षा दी।
- महात्मा बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद तथा उपालि थे।
- आनंद के कहने पर महात्मा बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति वैशाली में दिए और उन्होंने कहा कि अब बौद्ध धर्म ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाली पहली महिला गौतमी और दूसरी महिला आम्रपाली थी।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला पुरुष तपस्सु तथा मल्लि था।
- महात्मा बुद्ध ने कहा कि मेरे उपदेशों को अंधविश्वास के रूप में मत मानों बल्कि इसे तर्क के आधार पर अपनाओं।

महात्मा बुद्ध के चार सत्य वचन

1. संसार दुखों से भरा है।
2. सभी के दुखों का कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. दु:ख का सबसे बड़ा कारण इच्छा है।
4. इच्छा पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

- महात्मा बुद्ध ने इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए अष्टांगिक मार्ग (मध्य मार्ग, बीच का रास्ता) दिया और कहा कि व्यक्ति की इच्छा इतनी बड़ी नहीं होनी चाहिए कि वह पूरी नहीं हो सके और इच्छा इतनी भी छोटी नहीं होनी चाहिए कि पूरा होने पर भी संतुष्टि न हो।

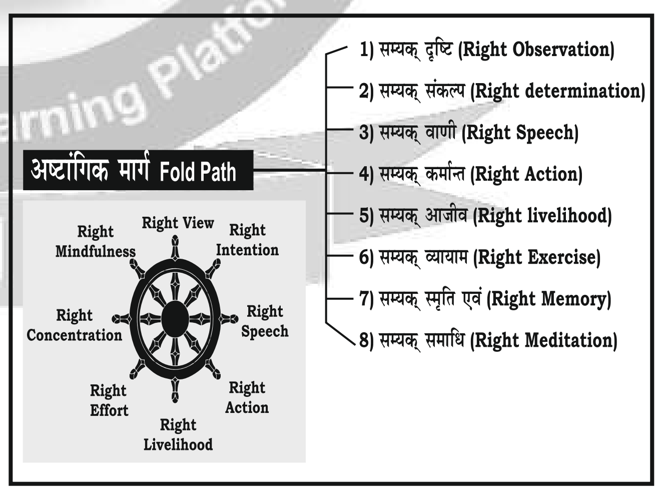

- महात्मा बुद्ध ने कहा कि यदि कोई इच्छा अधूरी रहेगी तो वह पुर्नजन्म का कारण बनेगी।
- पुर्नजन्म से छुटकारा पाने के लिए इच्छा को मारना पड़ेगा। इस क्रिया को उन्होंने मोक्ष कहा।
- महात्मा बुद्ध अपना उपदेश पाली भाषा में देते थे।

- महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने हेतु 10 शीलों पर बल दिया जो निम्न हैं–

दस शील Ten Precepts

1) अहिंसा (Ahimsa)
2) सत्य (Truth)
3) अस्तेय (चोरी न करना) Asthe (Not Stealing)
4) अपरिग्रह (किसी प्रकार की सम्पत्ति न रखना) Aparigraha (Not possessing any kind of property)
5) मद्य-सेवन न करना (Non Drinking)
6) असमय भोजन न करना (Non-Stop eating)
7) सुखप्रद विस्तर पर नहीं सोना (Not sleeping on a soothing bed)
8) धन-संचय न करना (Non-accumulation of wealth)
9) स्त्रियों से दूर रहना (Stay away from women)
10) नृत्य-गान आदि से दूर रहना (Abstain from dancing)

> **बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख सिद्धांतों को त्रिरत्न कहते है–**

1. बुद्ध
2. संघ
3. धम्म

- महात्मा बुद्ध का सबसे पहले शिक्षा का संकलन त्रिपिटक में किया गया।

बौद्ध धर्म के त्रिपिटक

1. विनयपिटक
2. सुत्तपिटक
3. अभिधम्म पिटक

- त्रिपिटक का अर्थ- ज्ञान भरा टोकरी होता है।
- त्रिपिटक श्रीलंका में सिंहली भाषा में लिखा गया।

> **बौद्ध साहित्य**

- इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
- ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।
- अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।
- बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक है, जो 3 पुस्तकों का समूह है।
  1. **सुत्तपिटक–** यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
  2. **विनयपिटक–** यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
  3. **अभिधम्मपिटक–** इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।
- बौद्ध धर्म का रामायण अश्वघोष की पुस्तक बुद्धचरितम् को माना जाता है।
- बौद्ध धर्म में प्रवेश की न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी।
- बुद्ध अपने जीवनकाल में ही संघ का प्रमुख देवदत्त को बनाना चाहते थे।
- महात्मा बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश कुशीनगर में सुभद्द को दिया।
- महात्मा बुद्ध उपदेश देते हुए पावापुरी पहुंच गए जहाँ एक जैन भिक्षु चन्द्र ने इन्हें सुकरमास (जहरीली मशरूम) खिला दिया।
- महात्मा बुद्ध की तबियत बिगड़ने लगी और उन्हें डायरिया हो गया।
- उत्तरप्रदेश के मल्ल महाजनपद में स्थित कुशीनगर में उनकी मृत्यु हो गई जिसे महापरिनिर्वाण के नाम से जानते हैं।
- इनका अंतिम संस्कार मल्ल महाजनपद के राजाओं ने धूम-धाम से किया।
- महात्मा बुद्ध के मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को 8 अलग-अलग स्थानों पर दफनाया गया। जिन्हें अष्ट् महास्थान कहते है।
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताया।
- महात्मा बुद्ध के समकालीन शासक बिम्बसार, उदयन, प्रसेनजीत तथा प्रद्योत थे।
- महात्मा बुद्ध की मृत्यु 483 ई.पू. में हुई और इनके मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चार बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

संगिति	वर्ष	स्थान	राजा	पुरोहित
I.	483 BC	राजगीर	आजातशत्रु	महाकश्यप
II.	383 BC	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
III.	255 BC	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत्त तिस्स
IV.	प्रथम शताब्दी 72 ई.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क (II अशोक)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

- चौथी बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बँट गया– हीनयान तथा महायान
- महायान आगे जाकर वज्रयान शाखा में टूट गया।
- वज्रयान शाखा ही बौद्ध धर्म के विनाश का कारण बनी। क्योंकि इन लोगों ने मूर्ति पूजा, मध्यपान, वेश्यावृत्ति को अपना लिया।
- इस सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ ग्रह्य समाज तथा मंजुश्री मुलकल्प है।
- चीन तथा थाइलैंड में वज्रयान शाखा की अधिकता है।
- बिहार के भागलपुर स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय में वज्रयान शाखा की शिक्षा दी जाती थी। इसे धर्मपाल ने बनवाया था।
- नालंदा विश्वविद्यालय में महायान की शिक्षा दी जाती थी। जिसके संस्थापक कुमारगुप्त थे। जिसे बख्तियार खिलजी ने ध्वस्त कर दिया।
- ओदंतपुरी विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के महायान से संबंधित है। जिसके संस्थापक गोपाल थे।

- कान्हेरी की शैल्यकृत गुफा में 11 सिर और 4 भुजाओं के बोधिसत्व का अंकन मिलता है।
- सारनाथ की भूमि स्पर्श मुद्रा वाले बुद्ध की प्रतिमा गुप्तकाल में बनाई गई थी।
- बुद्ध की खड़ी प्रतिमा कुषाण काल में बनाई गई थी।
- गौतम बुद्ध को देवता का स्थान कनिष्क के समय में दिया गया।
- भारत में सबसे पहले जिस मानव प्रतिमा की पूजा किया गया वह बुद्ध की प्रतिमा थी और इसी के साथ मूर्ति पूजा की नींव रखी गयी।
- बुद्ध की 80 फूट की प्रतिमा जो बोधगया में है उसे जापानियों द्वारा निर्मित की गयी है।
- 30 फीट ऊँचा और 10 फीट लम्बा गौतम बुद्ध का शयनमुद्रा में मूर्ति बोधगया में बन रहा है।
- बुद्ध की प्रथम मूर्ति शैली मथुरा शैली थी।
- बुद्ध का सर्वाधिक मूर्ति गांधार शैली में मिला।
- धार्मिक जुलूस का प्रारंभ बौद्ध धर्म से हुआ।
- भारत तथा एशिया का सबसे बड़ा मठ तवांगमठ अरूणाचल प्रदेश में है जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।
- विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध मठ पोतलामहल, लहासा (तिब्बत) में है।
- बौद्ध धर्म का शब्दकोश (Dictionary) महाविभाष्य सूत्र को कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासक- अशोक, कनिष्क (महायान), नागार्जुन, अश्वघोष, वसुमित्र थे।
- अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था।

बौद्ध धर्म से जुड़े चिन्ह

(i) गर्भ – हाथी
(ii) जन्म – कमल
(iii) गृहत्याग – घोड़ा (महाभिनिष्क्रमण)
(iv) युवा अवस्था – सांड
(v) ज्ञान प्राप्ति – पीपल (बौद्ध वृक्ष)
(vi) प्रथम उपदेश – चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तन)
(vii) समृद्धि – शेर
(viii) निर्वाण – पद्‌चिह्न
(ix) मृत्यु – स्तूप (महापरिनिर्वाण)

Note :– महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु वैशाख (अप्रैल) महीनें में पूर्णिमा के दिन हुई। वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा कहते हैं।

बौद्ध तथा जैन धर्म में समानता

- दोनों ने मोक्ष प्राप्ति तथा पुर्नजन्म में विश्वास किया।
- दोनों ने मूर्तिपूजा तथा भगवान के अस्तित्व का विरोध किया।
- दोनों ने कर्मकाण्ड का विरोध किए।
- दोनों ही हिन्दु धर्म से टूटे थे।

बौद्ध तथा जैन धर्म में अन्तर

- जैन धर्म ने पुर्नजन्म का कारण आत्मा को बताया जबकि बौद्ध धर्म ने इच्छा को बताया।
- जैन धर्म ने मोक्ष प्राप्ति के लिए संलेखना विधि अपनाया जबकि बौद्ध धर्म ने अष्टांगिक मार्ग अपनाया।
- जैन धर्म में ज्ञानप्राप्ति को कैवल्य कहा गया जबकि बौद्ध धर्म में मोक्ष कहा गया।

❑❑❑

Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

06. भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)

पारसी धर्म

- पारसी धर्म के पैगम्बर जर थुस्ट्र (ईरानी) थे।
- इनका पवित्र धार्मिक ग्रंथ जेन्दा अवेस्ता है।
- इनके अनुयायी को अग्निपूजक कहा जाता है।
- इनके देवता को अहुर कहा जाता है।
- इनका धार्मिक स्थल अग्निमंदिर होता है।
- पारसी मंदिरों को आतिश बेहराम कहा जाता है।
- इनपर अरबों द्वारा आक्रमण कर जबरन मजबूर करके जरथुस्ट्र को इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया गया जिस कारण वहां से आदमी भागकर भारत आकर गुजरात में बस गए।
- पारसी धर्म की उत्पत्ति ईरान में हुआ था।
- त्योहार – नवरोज

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

07. महाजनपद (Mahajanapad)

- ☞ 6वीं शताब्दी ई.पू. में, भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गया, जिसे दौरान अनेक महाजनपदों का निर्माण हुआ।
- ☞ प्राचीन भारत में राज्य के प्रशासनिक इकाईयों को महाजनपद कहा जाता है।
- ☞ कुछ जनपदों का वर्णन उत्तरवैदिक काल से मिलता है।
- ☞ इसका समय अवधि 600 ई.पू. से 340 ई.पू. तक माना जाता है।
- ☞ इसकी प्रमुख भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- ☞ इसका शासन व्यवस्था गणराज्य राज्यतंत्र था।
- ☞ इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रदेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिए उपयुक्त परिस्थिति बन गई।
- ☞ लोहे के हथियारों के कारण योद्धा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।
- ☞ खेती के नये औजार और उपकरणों से किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे। अब राजा अपने सैनिक और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस अतिरिक्त अनाज को एकत्रित करवा सकते थे।
- ☞ लोगों की जो प्रवल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति थी वह अब अपने जनपद या महाजनपद के प्रति हो गए।

- ➢ **वर्तमान में 16 महाजनपदों की स्थिति–**

उत्तरप्रदेश	8 महाजनपद
बिहार	3 महाजनपद
राजस्थान	1 महाजनपद
मध्यप्रदेश	1 महाजनपद
दक्षिण भारत	1 महाजनपद
भारत के बाहर	2 महाजनपद

- ➢ **बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं–**

क्र. सं.	महाजनपद	राजधानी	महत्वपूर्ण नगर (आधुनिक नामों के अनुसार)
1.	गान्धार	तक्षशिला	रावलपिंडी व पेशावर (पाकिस्तान)
2.	कम्बोज	हाटक/राजपुर	राजौरी व हजारा क्षेत्र (कश्मीर)(पाकिस्तान)
3.	मत्स्य/मच्छ	विराटनगर	जयपुर का समीपवर्ती क्षेत्र (राजस्थान)
4.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	दिल्ली, मेरठ और हरियाणा के आस-पास का क्षेत्र
5.	शूरसेन	मथुरा	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
6.	कोशल	श्रावस्ती	फैजाबाद, गोंडा, बहराइच (उत्तर प्रदेश)
7.	पांचाल	अहिच्छत्र, काम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
8.	चेदि	शक्तिमती	बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश)
9.	वत्स या वंश	कौशाम्बी	इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिला (उत्तर प्रदेश)
10.	काशी	वाराणसी	वाराणसी के आसपास के क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
11.	मल्ल	कुशावती/कुशीनारा	देवरिया (उत्तर प्रदेश)
12.	अश्मक या अस्मक	पाटन/पोतन	गोदावरी नदी का दक्षिणी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद)
13.	अवन्ति	उज्जैन/महिष्मति	मालवा (मध्य प्रदेश)
14.	वज्जि/वृजि	वैशाली/विदेह/मिथिला	वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा (बिहार)
15.	अंग	चम्पा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
16.	मगध	गिरिवज्र (राजगृह)	पटना, गया, नालंदा (बिहार)

मगध

- ☞ 16 महाजनपदों में मगध जनपद प्रारंभ में तो छोटा था। जो पाटलीपुत्रा से राजगीर तक फैला हुआ था, किन्तु मगध के शासकों ने मगध के सीमा को बंगाल से लेकर अफगानिस्तान तक तथा हिमालय से लेकर सतपुड़ा तक फैला दिया।
- ☞ इसका विस्तार उत्तर में गंगा नदी से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत था।
- ☞ मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।

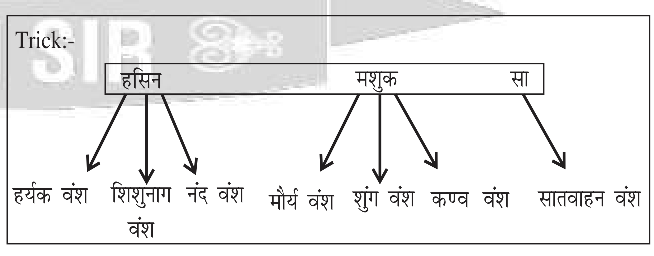

हर्यकं वंश (544-412 ई.पू.)

- ☞ महाभारत एवं पुराण में यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले **वृहद्रथ वंश** का शासन था। जिसके संस्थापक **वृहद्रथ** थे।
- ☞ इसकी राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) था।

- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **जरासंध** था।
- जरासंध अपना साम्राज्य विस्तार पूरे उत्तर भारत में करना चाहता था, पर **पाण्डव** और **कृष्ण** के विरोध में उसे अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।
- भीम के हाथों **मल्ल युद्ध** में **जरासंध** मारा गया। जरासंध का पुत्र उसके बाद मगध का शासक बना।
- रिपुंजय वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक था। उसकी हत्या उसके मंत्री **कुलीक** ने कर दी और अपने पुत्र को शासक बना दिया।
- घाटिया नामक सामंत ने कुलीक के पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को **मगध की गद्दी** पर बैठा दिया।
- किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक **साक्ष्य** बहुत ही कम है। अत: **हर्यक वंश** को ही पहला **ऐतिहासिक वंश** मानते हैं।

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)

- इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था।
- इसकी राजधानी **राजगृह** या **गिरिव्रज** थी।
- बिम्बिसार 52 वर्षों तक मगध पर राज्य किया। यह प्रथम राजा था जिसने प्रशासनिक राज्य पर बल दिया। यह स्थायी सेना रखता था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने **अंग राज्य** के शासक **ब्रह्मदत्त** को हराकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक बना दिया।
- बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- बिम्बिसार की पहली पत्नी महाकोशला थी। जो कोशल राज की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी। इनके साथ दहेज में काशी प्रांत मिला था। जिससे एक लाख की वार्षिक आय आती थी।
- बिम्बिसार की दूसरी पत्नी वैशाली (लिच्छवी) नरेश चेतक की पुत्री राजकुमारी चेल्लना थी। जिससे अजातशत्रु का जन्म हुआ था।
- बिम्बिसार की तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र कुल की राजकुमारी क्षेमा थी।
- बिम्बिसार की चौथी पत्नी आम्रपाली थी, जो वैशाली की गणिका थी।
- बिम्बिसार अपनी पत्नी रानी **चेल्लेना** से प्रवाहित होकर **जैन धर्म** अपना लिया था।
- यह जैन तथा बौद्ध दोनों धर्मों के समकालीन थे।
- बिम्बिसार के पिता का नाम **भाट्टीया** था।
- पुराण में बिम्बिसार को **श्रेणिक** कहा जाता है।
- इसके समय अवन्ति के राजा **चन्द्रप्रद्योत** को एक असाध्य रोग (लाइलाज बीमारी) हो गई। अत: इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज **वैद्य जीवक** को भेजा। जीवक के इलाज से **चन्द्रप्रद्योत** स्वस्थ हो गए। उन्होंने अवन्ति को मगध के अधीन कर दिया और अंग राज्य को जीतकर **मगध सम्राज्य** का विस्तार किया।
- बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसने वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- इसकी हत्या इसी के पुत्र **अजातशत्रु** ने 492 ई. पू. में कर दी।

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)

- इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं। इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अत: इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- यह अपने मामा प्रसेनजीत की पुत्री **वजीरा** से प्रेम करता था।
- इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर की किलाबंदी करा दी थी।
- राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- इसके समय सबसे बड़ी घटना **महात्मा बुद्ध** की मृत्यु थी।
- अजातशत्रु के काल में ही **सप्तपर्णी गुफा** में राजगीर से **पहली बौद्ध संगीति** हुई।
- इसने अपने सहयोगी **वर्षकार** के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- इस युद्ध में उसने दो नए हथियार **रथमूसल** तथा **महाशिला कंटक** का प्रयोग किया।
- जैन धर्म के पहले उपांग में **महावीर** और **अजातशत्रु** के रिश्ते के बारे में बताया गया है।
- इसने प्रारंभ में जैन तथा बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- इसने 16 वर्ष तक मगध पर शासन किया था।
- इसके दो पुत्र **उदयभद्र** तथा **उदायिन** था।
- इसके पुत्र **उदायिन** ने इसकी हत्या कर दी।

उदायिन (460-444 ई.पू.)

- इसने अपनी राजधानी **कुसुमपुर (पुरुषपुर)** बनाया था। यही कुसुमपुर (पुरुषपुर) आगे चलकर **पाटलीपुत्र** कहलाया था।
- इनकी माता का नाम **पद्मावती** था।
- इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए बौद्ध धर्म में इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- इसका अन्य नाम **उदायी** या **उदयभद्र** था। यह चंपा का उप राजा था।
- पुराणों एवं जैन ग्रंथों में के अनुसार उदायिन ने गंगा एवं सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम **पाटलीपुत्र** रखा। इसके पुत्र ने पाटलीपुत्र को **पटना** रख दिया।
- इसने अपने राजधानी में **जैन चैत्य** का निर्माण करवाया था।
- इसकी हत्या किसी अनजान व्यक्ति द्वारा **चाकू से गोदकर** कर दी।
- उदायिन का पुत्र **नागदशक** एक **आयोग्य शासक** था। इसकी हत्या इसी के सेनापति **शिशुनाग** ने कर दी और एक **नया वंश शिशुनांग वंश** की स्थापना किया।

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

➢ **शिशुनाग (412- 394 ई.पू.)**

☞ इस वंश के संस्थापक **शिशुनाग** थे।

☞ इन्होंने **अबंती तथा वत्सराज** पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिलाया।

☞ इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीग्राम से हटाकर **वैशाली** को बनाया।

☞ इसके शासन के समय मगध साम्राज्य के अंतर्गत **बंगाल** से लेकर **मालवा** तक का क्षेत्र था।

☞ इस वंश का अगला शासक **कालाशोक** था।

➢ **कालाशोक (394-366 ई.पू.)**

☞ शिशुनाग के मृत्यु के पश्चात् **कालाशोक** मगध की गद्दी पर बैठा।

☞ इसका नाम पुराण तथा दिव्यावदान में **काक वर्ण** मिलता है।

☞ इसने वैशाली के स्थान पर **पाटलीपुत्र** को पुनः अपना राजधानी बनाया।

☞ इसके समय द्वितीय **बौद्ध संगीति** वैशाली में हुई थी।

☞ यह **ब्राह्मण वंश** का प्रथम संस्थापक माना जाता था।

☞ पुराण के अनुसार यह **क्षत्रिय** था।

☞ इस वंश का अंतिम शासक **नंदिवर्धन** था, जिसकी हत्या **महापद्म नंद** ने कर दी और **शिशुनाग वंश** के स्थान पर **नंद वंश** की स्थापना किया।

नंद वंश (344-323 ई.पू.)

☞ इस वंश का सर्वाधिक महाशक्तिशाली संस्थापक **महापद्म नंद** थे। जो जाति के शूद्र थे। इन्होंने राजपूतों का विनाश करके **सर्वक्षत्रांतक (क्षत्रियों का नाश करने वाला)** की उपाधि धारण कर ली।

☞ महापद्म नंद को **भार्गव (दूसरा परशुराम का अवतार)** भी कहा जाता था।

☞ इस वंश की जाति नाई (नापिथ) थी।

☞ राजानंद के प्रधानमंत्री का नाम राक्षस था।

☞ राक्षस का असली नाम विष्णुगप्त था।

☞ केंद्रीय शासन पद्धति का जनक या पिता महापद्म नंद को माना जाता है।

☞ इस वंश के धन-दौलत के बारे में वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा की गई थी।

☞ व्याकरण के आचार्य पाणिनी महापद्म नंद के परम् मित्र थे।

☞ इस वंश के शासनकाल में उपवर्ष, वर्ष, रूचि, वर, कात्यायन जैसे विद्वान जन्म लिया था।

☞ इसी वंश के शासक ने एकराष्ट्र की विचार-धारा दिया था।

☞ इस वंश की राजधानी पाटलिपुत्र थी।

☞ इस वंश के समय मगध राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।

☞ सम्राट महापद्म नंद पहले शासक थे। जिन्होंने गंगा घाटी की सीमाओं का अतिक्रमण कर विंध्य पर्वत के दक्षिण तक विजय पताका लहराई थी।

☞ इसने कलिंग जीतकर **एकराट** तथा **एकक्षत्र** की उपाधि हासिल की।

☞ यह कलिंग जीतकर पूरी तरह मगध में नहीं मिला पाया।

☞ इस वंश का द्वितीय शासक पण्डुक था।

☞ इस वंश का अगला शासक **घनानंद** था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।

☞ इस वंश का सबसे लालची एवं धनसंग्रही शासक में घनानंद को गिना जाता था।

☞ जब सिकंदर भारत पर आक्रमण किया उस समय नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद था।

☞ विश्व विजेता सिकंदर के भारत पर आक्रमण के समय सम्राट घनानंद की विशालतम सेना देखकर के हौसला पस्त हो गया। इतनी विशालतम शक्ति के सामने सिकंदर जैसे महान विश्व विजेता भी नतमस्तक होकर वापस लौटने में ही अपनी भलाई समझी।

☞ सिकंदर के भारत से जाने के बाद मगध साम्राज्य में अव्यवस्था और अशांति फैल गई। प्रजा घनानंद के अत्याचार से ग्रस्त थी। पूरे राज्य में अराजकता फैली हुई थी।

☞ इसने अपने दरबार से चाणक्य को अपमानित करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से मगध में फैली अराजकता और विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाकर घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण (फारसी आक्रमण)

☞ भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्शिाली राज्य था।

☞ ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमजोर शासक थे। जिस कारण विदेशी आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण किया।

☞ भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हखमनी वंश के राजा ने किया। हखमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।

☞ इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज के शासक को हरा दिया।

☞ इसने भारत में फारसी शासन का विस्तार किया।

मकदूनिया/यूनानी आक्रमण

☞ ईरान आक्रमण के बाद भारत पर दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का हुआ।

☞ यूनान के राजा फिलिप द्वितीय का पुत्र सिकन्दर था।

- इनके माता का नाम ओलम्पिया था।
- यह अपने पति को जहर देकर हत्या कर दी थी।
- सिकन्दर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसेडोनियन था।
- इसका जन्म मेसिडोनिया (पेला) में 356 ई.पू. में हुआ।
- इसकी पत्नी रूखसाना/रेक्सोना थी। रूखसाना के पिता फारसी शासक शाहदारा थे।
- इसके घोड़े का नाम बुफेकराल/ब्यूसेफेलरू/बऊकेफला था।
- इसके गुरू का नाम अरस्तु था। जिसके नाम पर उसने झेलम नदी के तट पर एक नगर भी बसाया था।
- अरस्तु के गुरू प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा जाता था।
- प्लेटों के गुरू सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- भारत में सिकन्दर का सबसे पहला सामना तक्षशिला के राजकुमार आम्भिक से हुआ था। वहाँ के राजा आम्भिक ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार ली। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी।
- 328 ई.पू. में सिकन्दर ने ईरान और अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त किया।
- पंजाब के राजा पोरस (पुरु) और सिकन्दर के बीच झेलम नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में पोरस हार गए, किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकन्दर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकन्दर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को झेलम, वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध कहते हैं।
- सिकन्दर स्थल मार्ग से 325 ई० में वह अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया था।
- 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकन्दर की 33 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई।
- सिकन्दर का मकबरा बेबीलोन में है।
- बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में से एक है।
- सिकन्दर भारत से कुशल बढ़ई प्राप्त करना चाहता था।
- सिकन्दर भारत में 19 महीने तक रहा था।
- सिकन्दर के साथ भारत आनेवाला लेखक निर्याकस, आने सिक्रेटस, ऑस्टिबुलस थे।
- सिकन्दर हिन्दकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी (हाईफेनिया) को पार करने से मना कर दिया।
- सिकन्दर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने व्यास नदी के रौद्र रूप को देख कर भारत से युद्ध के लिए आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अत: स्थल मार्ग से 325 ई० पू० सिकन्दर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया।
- सिकन्दर का थल सेना के सेनापति सेल्युकस निकेटर था। जबकि जल सेना का सेनापति निर्याकस था।
- सिकन्दर का पुत्र सिकंदर चतुर्थ था जो पत्नी रूखसाना का पुत्र था।
- सिकन्दर लड़ाई में खुद सेना से आगे होकर लड़ने लगता था जिससे सेना का मनोबल और बढ़ जाता था।
- सिकन्दर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- सिकन्दर पूरी दुनिया के 60% भाग को जीत लिया था।
- सिकन्दर ने एशिया माईनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गंधार, कंबोज जीत लिया था।
- सिकन्दर को पूरी दुनिया जीतने का सपना उसके गुरू अरस्तु ने दिखाया था।

08. मौर्य वंश (Maurya Dynasty)

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 - 298 ई.पू.)

- प्राचीन भारत का राजवंश जिसने 137 वर्ष तक भारत में राज्य किया। इसके स्थापना का श्रेय चंद्रगुप्त मौर्य और उसके प्रधानमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है। जिन्होंने नंद वंश के राजा घनानंद को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरू और प्रधानमंत्री चाणक्य थे।
- इन्होंने अपना राजधानी पाटलीपुत्र को बनाया।
- 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा।
- इनकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी।
- मौर्यकाल में शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध केन्द्र तक्षशिला था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य जब मगध का शासक था तब यूनानी आक्रमणकारी सेलयुकस निकेटर ने (305 ई.पू. में) आक्रमण कर दिया, किन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसे पराजित कर दिया और उसकी बेटी कॉर्नेलिया (हेलेना) से विवाह कर लिया और दहेज में एरिया (हेरात), आराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (ब्लूचिस्तान) तथा पेरिपनिसडाई (काबुल) ले लिया।
- सेल्युकस निकेटर ने अपना एक राजदूत मेगास्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। यूनानी लेखक पाटलीपुत्र को पोलीब्रोथा कहते थे।
- विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस में नंद वंश के पतन तथा मौर्य वंश के उदय की चर्चा है।
- मेगास्थनीज की पुस्तक इंडिका से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है। इंडिका में लिखा है कि मौर्य काल में समाज 7 भागों में बंटा था–

  1. दार्शनिक 2. अहीर (पशुपालक) 3. सैनिक 4. किसान 5. निरीक्षक 6. कारीगर तथा 7. सभासद (मंत्री)।
- इनमें से सर्वाधिक संख्या किसानों की थी तथा भारतीयों को लिखने में रूचि नहीं थी।
- चाणक्य ने **अर्थशास्त्र** नामक ग्रंथ की रचना की है। इससे हमें मौर्य साम्राज्य के राजनितिक गतिविधि की जानकारी मिलती है।
- मौर्य वंश के बारे में सर्वाधिक जानकारी चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र से मिलती है। जो एक राजनैतिक एवं प्रशासनिक पुस्तक है। इस पुस्तक के 15 अधिकरण (Lesson) है। इस पुस्तक में राजा के राजत्व सिद्धांत की चर्चा है, और कहा गया है कि एक मजबूत राजा को साप्तांग सिद्धांत पालन करना होगा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल अभियान भी किया था, जिसकी जानकारी महास्थान अभिलेख से मिलती है।
- गोरखपुर में स्थित साहगौर ताम्र अभिलेख से अकाल के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा किए गए राहत कार्यों की चर्चा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु के नेतृत्व से मिली थी। भद्रबाहु के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य कर्नाटक के श्रवण बेलगोला चला गया। जहाँ 298 ई.पू. संलेखना (संथारा) विधि से प्राण त्याग दिया।
- रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार) गुजरात से जानकारी मिलती है, कि चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त ने सरकारी खर्च से गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवायी थी।
- इस अभिलेख ने चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिमी विस्तार की जानकारी मिलती है।
- जस्टिन ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- विलियम जोंस ने यह पहचान कराया कि सेण्ड्रेकोटस ही चन्द्रगुप्त मौर्य हैं।

बिन्दुसार (298-269 BC)

- इसके पुत्र का नाम सुशीम, अशोक और तिष्य था।
- इसके दरबार में सीरिया के नरेश एण्टियोकस ने अपना राजदूत डायमेकस को भेजा।
- इसे मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- स्ट्रैबो के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के नरेश से अंजीर मीठी शराब तथा दार्शनिक मांगा था।
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला (कश्मीर) में दो बार विद्रोह हुए।
- उस समय तक्षशिला का राजकुमार बिन्दुसार का बड़ा बेटा सुशीम था, जो इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।
- बिन्दुसार ने अपने छोटे पुत्र अशोक, जो उस समय अवन्ति का राज्यपाल था, उसे विद्रोह दबाने के लिए तक्षशिला भेजा।
- अशोक ने क्रूरता पूर्वक विद्रोह को दबा दिया।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानने वाला था। जिसकी स्थापना मोखलीपुत्र गोशाल ने किया था।
- बिन्दुसार को **अमित्रघात** एवं **शत्रुविनाशक** भी कहते हैं।
- भारतीय इतिहास में इसको **पिता का पुत्र** और **पुत्र का पिता** की उपमा से जाना जाता है।

सम्राट अशोक (269-232 BC)

- इसका जन्म 304 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुआ।

- इसके पिता का नाम **बिन्दुसार** तथा माता का नाम **शुभद्रांगी** था, जिसे **धर्मा** के नाम से जाना जाता था।
- **269 ई.पू.** में अशोक ने अपना **राज्याभिषेक** कराया।
- राज्याभिषेक के **8वें** वर्ष अर्थात् **261 ई.पू.** में अशोक ने **कलिंग** पर आक्रमण किया तथा कलिंग की राजधानी **तोसली** पर अधिकार कर लिया।
- कलिंग आक्रमण की जानकारी खारवेल के **हाथीगुफा** अभिलेख से मिलती है।
- इस अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय कलिंग का राजा **नंद राज** था।
- कलिंग में हुए **भीषण नरसंहार** को देखकर अशोक का **हृदय परिवर्तित** हो गया और अशोक ने युद्ध नीति को सदा के लिए त्याग दिया और **भेरीघोष** के स्थान पर **धम्मघोष** की स्थापना किया।
- ऐसा माना जाता है कि अशोक ने **हाथियों** को प्राप्त करने के लिए **कलिंग** पर आक्रमण किया था।
- कलिंग आक्रमण के बाद अशोक ने **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- इसे बौद्ध धर्म अपनाने की प्रेरणा इसके **भतीजे निग्रोध** से मिली जबकि **बौद्ध धर्म** की शिक्षा उपगुप्त ने दी थी।
- अशोक शुरूआत में **ब्राह्मण धर्म** मानता था। परंतु बाद में **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- अशोक का बौद्ध धर्म उसका **व्यक्तिगत धर्म** था। उसने कभी भी बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया। किन्तु अशोक बौद्ध धर्म को संरक्षण देता था।
- अशोक ने **बौद्ध धर्म** के प्रचार के लिए अपने बेटे **महेन्द्र** एवं बेटी **संघमित्रा** को **श्रीलंका** भेजा।
- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष से ही धर्म यात्रा प्रारंभ की जिसका क्रम इस प्रकार है– बोधगया, कुशीनगर, लुम्बिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ तथा श्रावस्ती।
- अशोक ने अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बोध गया की यात्रा की। उसके बाद बीसवें वर्ष लुम्बिनी नामक ग्राम की यात्रा की और कर (Tax) घटा कर केवल 1/8 भाग लेने की घोषणा की।
- अशोक के काल में तीसरी बौद्ध संगीति 255 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुई थी। जिसका अध्यक्ष **मोग्गलीपुत्त तिस्स** था।
- श्रीलंका के राजा ने सिंहली संप्रदाय को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक धार्मिक रूप से सहिष्णु था अर्थात् वह किसी भी धर्म के साथ भेद-भाव नहीं करता था।

  Note :– श्रीलंका का राजा, अशोक के उपदेशों का पालन करते थे, किन्तु श्रीलंका अशोक के अधीन नहीं था।
- अशोक के समय मुद्राएं सोने (स्वर्ण), चाँदी (कार्षापण) एवं ताँबें (काकणी) आदि के होते थे।

➢ **अशोक ने आजीवक संप्रदाय के लोगों को गया में स्थित बराबर की पहाड़ियों में 4 गुफा दान में दिया–**

(i) सुदामा
(ii) कर्ण
(iii) चोपड़
(iv) विश्व झोपड़ी

- आजीवकों के लिए नागार्जुन गुफा दशरथ द्वारा प्रदान किया गया था। इसका उत्तराधिकारी कुणाल था।
- अशोक की 5 पत्नियाँ (असंधिता, देवी, कारूवाकी, पदमावती, नित्यारक्षक) थी, जिसमें अशोक पर सर्वाधिक प्रभाव **कारूवाकी** का था।
- **कारूवाकी** के कहने पर ही अशोक ने युद्ध त्याग दिया था।
- अशोक को अभिलेख लिखने की प्रेरणा ईराक के राजा डेरियस (दारा) या दायबाहु से मिली।
- अशोक के अभिलेख को पढ़ने और समझने की पहली सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को मिली।
- अशोक ने अपने अधिकतर अभिलेखों में अपना नाम देवनाम प्रियदर्शी (देवताओं का पसंद) लिखा है।
- मध्य प्रदेश के गुर्जरा तथा कर्नाटक की मास्की, नेट्टूर तथा उद्गोलन अभिलेखों में अशोक का स्पष्ट नाम अशोक लिखा हुआ है।
- भाब्रु अभिलेख में अशोक के लिए मगध सम्राट नाम का प्रयोग हुआ।
- असम से अशोक का कोई भी साक्ष्य नहीं मिला है, जिससे यह पता चलता है कि यह क्षेत्र अशोक के सम्राज्य से बाहर था।
- अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।

अशोक के चतुर्दश शिलालेख

1. **प्रथम शिलालेख :** अहिंसा पर बल, पशुबलि पर रोक, सभी मनुष्य मेरे बच्चे के समान।
2. **द्वितीय शिलालेख :** इसमें पशु चिकित्सा की चर्चा है साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य जैसे- चेर, पाड्य, श्रीलंका, केरलपुत्र, सतियपुत्र की चर्चा है, किन्तु चोल वंश की चर्चा नहीं है।
3. **तृतीय शिलालेख :** इसमें अशोक ने 3 अधिकारी राजुक, युक्तक तथा प्रदेशिक का चर्चा किया है, जो धम्म के प्रचार के लिए थे। अशोक ने इस शिलालेख में राजकीय अधिकारियों को आदेश जारी किया कि वे हर पांचवें वर्ष दौरे पर जाय। इसमें धर्म संबंधित कुछ नियम भी निर्देशित हैं।
4. **चतुर्थ शिलालेख :** इसमें भेरीघोष (युद्ध) के स्थान पर धम्मघोष (बौद्ध) के नीति का चर्चा है।
5. **5वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है, जो धार्मिक जीवन की देख-रेख करता है। इसमें समाज तथा वर्ण व्यवस्था उल्लेख है।
6. **6वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने कहा है कि मेरे अधिकारी जनकल्याण के लिए जब चाहे मुझसे मिल सकते हैं। इसमें आत्म नियंत्रण संबंधित शिक्षा दी गई है।
7. **7वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने विभिन्न धर्मों के आपसी समन्वय की बात कही है। यह सबसे बड़ा शिलालेख है। इसमें तीर्थ यात्रा की चर्चा है।

8. **8वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक के धर्म यात्रा की चर्चा है, जो इसके राजाभिषेक से 8वें वर्ष से प्रारंभ होती है। बोध गया के भ्रमण का उल्लेख।
राज्याभिषेक के 10वें वर्ष - गया
राज्याभिषेक के 20वें वर्ष - लुम्बिनी।
9. **9वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने छोटे-मोटे त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस शिलालेख में सच्ची शिष्टाचार और सच्ची भेंट का उल्लेख है।
10. **10वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म के महत्व के बारे में चर्चा है। इसमें सम्राट अशोक ने आदेश जारी किया कि राजा तथा उच्च राज्य अधिकारी हमेशा ही प्रजा के हित के बारे में सोंचे। इसमें धम्म नीति का व्याख्या की चर्चा की गई है।
11. **11वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मेरे अधिकारी ब्राह्मणों को न सताएं।
12. **12वाँ शिलालेख :** इसमें स्त्रियों के स्थिति में सुधार के लिए स्त्री महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है एवं हर प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
13. **13वाँ शिलालेख :** इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है तथा साथ ही सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की बात भी वर्णित है। साथ ही पड़ोसी राजाओं के संबंध का भी उल्लेख है।
14. **14वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मैंने ऊपर लिखे गए शिलालेख के अतिरिक्त बहुत से काम किए हैं, जो इसमें नहीं लिखे गए हैं। इसके लिए लिखने वाला जिम्मेदार है, मैं नहीं। इसमें जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया गया है।

अशोक के स्तंभलेख (लघु अभिलेख)

➢ **भाब्रू अभिलेख**

☞ राजस्थान के भाब्रू अभिलेख में अशोक ने खुद को मगध का सम्राट बताया है।

☞ भाब्रू अभिलेख में इसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ की चर्चा है।

➢ **अशोक के 7 स्तंभलेख (लघु अभिलेख) मिले हैं–**

(i) **रूमनदेई अभिलेख (नेपाल) :** यह नेपाल के लुम्बिनी में है। यह आरमाईक लिपि में है। यह सबसे छोटा अभिलेख है। यह एक मात्र अभिलेख है जिसमें अशोक ने प्रशासनिक चर्चा न करके आर्थिक क्रियाकलाप की चर्चा की है।

(ii) **कौशाम्बी अभिलेख (उत्तरप्रदेश) :** इसमें अशोक ने अपनी पत्नी कारूवाकी द्वारा दिए गए दान की चर्चा की है। अत: इसे रानी का अभिलेख भी कहते हैं। अकबर ने इसे इलाहाबाद स्थापित कर दिया।

(iii) **टोपरा अभिलेख (हरियाणा) :** फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।

(iv) **मेरठ अभिलेख (उत्तरप्रदेश) :** पहले यह मेरठ में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित कर दिया।

(v) **रामपूवा अभिलेख :** यह बिहार के चंपारण में है। इसकी खोज 1872 ई. में कारलायल ने की।

(vi) **लौरिया नंदन गढ़ :** यह बिहार के चंपारण में है।

(vii) **लौरिया अरराज :** यह बिहार के चंपारण में है।

➢ **निगाली सागर स्तंभलेख (नेपाल)**

☞ इस स्तंभलेख से पता चलता है कि अशोक अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष निगाली सागर आया तथा यहाँ कनकमुनि के स्तूप का संवर्धन किया।

➢ **सर-ए-कुना अभिलेख**

☞ यह अफगानिस्तान के कांधार से मिला है। जो ग्रीक तथा अरमाईक भाषा में है।

☞ कलिंग अभिलेख में अशोक ने कहा है, कि संसार के सभी मानव मेरी संतान (पुत्र) हैं। मैं एक माँ की भांति उसके सांसारिक तथा प्रलौकिक जीवन की कामना करता हूँ। अशोक ने कहा है, कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को योगाधाम को देकर निश्चित हो जाती है। उसी प्रकार मैं भी समाज की देख-रेख के लिए राजूक को नियुक्त किया है।

☞ अशोक ने अपने अभिलेखों के लिए जिन पत्थरों का इस्तेमाल किया, वे उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले से मंगाया गया।

प्रशासनिक व्यवस्था

☞ मौर्यकालीन प्रशासन एक केन्द्रीकृत शासन था। राजा को सलाह देने के लिए मंत्री परिषद् होता था।

☞ उच्च अधिकारियों को तीर्थ या महामात्र अथवा अमात्य कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी। जासूसों के लिए चर शब्द का प्रयोग किया गया था।

न्याय व्यवस्था

☞ मौर्य काल में सम्राट ही सर्वोच्च न्यायालय, अंतिम न्यायालय तथा न्यायाधीश था। राजा का फैसला ही अंतिम एवं सर्वमान्य होता था।

प्रशासनिक ढाँचा

☞ मौर्यकाल में सबसे बड़ा पद राजा का होता था, उसके नीचे युवराज होते थे।

☞ प्रांत का शासन प्रांतपति के पास था।

☞ विश (जिला), विशपति के नियंत्रण में रहता था।

☞ 10 गांवों का छोटा मालिक या गोप होता था। जो प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव हुआ करती थी। जो ग्रामीण (मुखिया) के नियंत्रण में रहती थी।

☞ इस समय न्यायाधीश को राजूक कहा जाता था।

- **मौर्यकाल में प्रांतों की संख्या 4 थी, लेकिन अशोक के समय 5 हो गई, जो निम्नलिखित हैं-**

अशोककालीन मौर्य साम्राज्य के 5 प्रांत			
	प्रांत/चक्र	**राजधानी**	**प्रमुख स्थल**
1.	कलिंग	तोसली (धौली)	कलिंग
2.	अवंति राष्ट्र	उज्जयिनी	मालवा, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़
3.	प्राशी (पूर्वी प्रांत)	पाटलिपुत्र	बिहार-बंगाल के और उत्तर प्रदेश के क्षेत्र
4.	उत्तरापथ	तक्षशिला	गांधार, कंबोज, पंजाब, कश्मीर और अफगानिस्तान
5.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि	विन्ध्य के दक्षिण का क्षेत्र

अशोक के उत्तराधिकारी

- 232 ई.पू. (BC) पाटलीपुत्र में अशोक की मृत्यु हो गई।
- इसके बाद मगध की गद्दी पर अशोक का पुत्र कुणाल बैठा।
- अशोक के पौत्र दशरथ ने आठ वर्षों तक शासन किया। अशोक की भांति उन्होंने देवनामप्रिय की उपाधि धारण किया तथा आजीवक संप्रदाय के साधुओं के लिए गया जिले में नागार्जुन पहाड़ी पर 3 गुफाओं का निर्माण कराया।
- अशोक का कोई भी उत्तराधिकारी योग्य नहीं था। मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहदथ था। जो एक कमजोर तथा अयोग्य शासक था।
- इसके शासन काल में कलिंग नरेश खारवेल ने कलिंग को मगध से स्वतंत्र कर लिया।
- वृहदथ का सेनापति पुष्यमित्र शुंग था जिसने सेना के निरीक्षण के दौरान वृहदथ की हत्या कर दी और मौर्य वंश के स्थान पर शुंग वंश की स्थापना कर दी।

❒❒❒

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

09. ब्रह्माण सम्राज्य (Brahmin Empire)

शुंग वंश (185-73 BC)

- मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- इस वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया। विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (मध्यप्रदेश) था।
- पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी शासक माना जाता है। इसका प्रमाण दिव्यावदान से प्राप्त होता है। हालांकि इनके काल में कई बौद्ध विहार का भी निर्माण हुआ।
- इसने बहुत सारे बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- पाणिनी ने अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- मनु ने मनुस्मृति लिखा। गार्गी ने गर्गीसंहिता लिखा।
- जिनसेन ने हरिवंश की रचना किया।
- इसके समय दो यमन विदेशी आक्रमण हुए। दोनों ही यमन आक्रमण को पुष्यमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- इन दोनों ही आक्रमण के समय पुष्यमित्र शुंग विजयी हुए और इस अवसर पर पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेघ यज्ञ करवाया एवं अपने राजधानी पाटलीपुत्र स्थानांतरित करके विदिशा को बनाया।
- पहले आक्रमण का नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया।
- दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मिनाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- मिलिंद (मिनाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- इस वंश के शासक भागभद्र के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोटस आया था। जो भागवद् धर्म अपना लिया।
- इसने भगवान विष्णु के सम्मान में विदिशा या वेसनगर (मध्यप्रदेश) में गरूड़ध्वज अभिलेख का निर्माण कराया था। उसने उसपर भगवान विष्णु के लिए देवदेवश्य शब्द का प्रयोग किया।
- इस वंश के 10वें एवं अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्व वंश की स्थापना कर दी।

कण्व वंश (73-30 BC)

- इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदिशा को बनाया।
- इस वंश का अंतिम अयोग्य एवं दुर्बल शासक सुशर्मा था। जिसकी हत्या उसके मंत्री सिमुक (आंध्र राजा) ने 30 ई.पू. में कर दी और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

सातवाहन वंश (प्रतिष्ठान) [30 BC-250 AD]

- इस वंश के संस्थापक **सिमुक** थे।
- सातवाहन की राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) थी जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था।
- सातवाहन वंश किसी न किसी रूप में तीन शताब्दियों तक बने रहें। जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है।
- सातवाहन वंश का सबसे योग्य शासक **हाल** था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौमती पुत्र शातकर्णी था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमीपुत्र शातकर्णी ने उसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी महाराष्ट्र के नासिक जोगलथंबी से मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर गौतमी पुत्र शातकर्णी एवं दूसरी ओर नहपान का नाम और चित्र अंकित है।
- जिससे पता चलता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने शक शासक नहपान को हराया था।
- इस वंश का अगला शासक वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी था।
- इसके समय पुनः उज्जैन के शक ने आक्रमण किया। इस बार शक वंश की ओर से आक्रमण का नेतृत्व रूद्रदामन कर रहा था।
- रूद्रदामन ने वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।
- इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री शातकर्णी था। इनके सिक्के पर जहाज का चित्र अंकित था।
- सातवाहन वंश ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।
- ब्राह्मणों को सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शासकों ने दिया।
- वेतन के बदले भूमि देने की सामंती व्यवस्था सातवाहन ने प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- सातवाहन समाज मातृसतात्मक था।
- यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरूष ही होता था।
- इस समय सीसा के सिक्का का प्रयोग होता था।
- चाँदी के सिक्के को काषापर्ण तथा सोने के सिक्के को सुवर्ण कहते थे।
- सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।

❑❑❑

10. मौर्योतर काल
(Post Mauryan Period)

- मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योग्य शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- मौर्योतर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं–

  I – Indo Greek (हिन्द यवन)

  S – शक् (सीथियन)

  P – पहलव (पार्थियन)

  K – कुषाण

हिन्द यूनानी (Indo Greek)

- इनका क्षेत्र हिन्दकुश पर्वत के समीप का बैक्ट्रिया प्रांत था। अत: इन्हें बैक्टेरियन शासक भी कहते हैं।
- डेमोट्रियस ने शुंग राजा, पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- अगला शासक मिनाण्डर बना। इसने भी शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- इसे (मिनाण्डर) बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- नागसेन एवं मिनाण्डर (मिलिन्द) के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्द पन्हों में है।

'शक वंश'/सिथियन वंश (90BC)

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाला दूसरा आक्रमणकारी शक या सिथियन थे।
- ये बोलन-दर्रा पार करके भारत आये थे।
- शक् मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- इन्हें युची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया था।
- शक् राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- शकों के शासन व्यवस्था क्षत्रप शासक व्यवस्था थे।
- शकों ने भारत में उत्तर एवं पश्चिम दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- नासिक के शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- सबसे प्रतापी शक् शासक उज्जैन का रूद्रदामन था।
- रूद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्टि पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया।
- रूद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- यह संस्कृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है। इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- रूद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण (जीर्णोद्धार) अपने अधिकारी सुविशाख द्वारा करवाया।
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए। इस सिक्के को रूपक कहा जाता था।
- शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्क के Calendar का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत कहते हैं।

ग्रेगोरियन कैलेंडर

- यह सूर्य पर अधारित है।
- यह ईसा के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।
- **विक्रम संवत्–** इसे मालवा शासक विक्रमादित्य-IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।
- यह ग्रेगोरियन Calendar से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत में तिथि ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 57 जोड़ दिया जाता है।
- इसी कारण संविधान लागू होने की तिथि 1949 को विक्रम संवत् में (1949 + 57) = 2006 कहलाता है।
- **शक् संवत**
- इसे कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय प्रारम्भ किया था।
- यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 ई. बाद आया। अत: यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 वर्ष पीछे है।
- 22 मार्च, 1957 ई. से राष्ट्रीय पंचाग के रूप में शक् संवत को अपनाया गया था।

- शक् संवत में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 78 वर्ष घटा दिया जाता है।
- शक् संवत एवं विक्रम संवत के बीच 135 वर्ष के अंतर है।
- विक्रम संवत्, शक् संवत्, हिजरी Calendar (मुस्लिम Calendar) चन्द्रमा पर आधारित है। अत: इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पीछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है।

पहलव/पार्थियन वंश

- मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा वंश पार्थियन या पहलव थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोफर्निस थे जिनका उल्लेख पाकिस्तान के ''तख्त-ए-बही'' अभिलेख में मिला है। यह खरोष्ठी लिपि में है। इनके समय में पुर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक 'सेन्ट थामस' भारत आया था। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

कुषाण वंश

- मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाला अंतिम शासक कुषाण वंश थे।
- ये मध्य एशिया के निवासी थे।
- मध्य एशिया में यूची कबीला 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के क्षेत्र तक था।
- कुषाण वंश के संस्थापक 'कुजुलकडफिसस' थे।
- अगला शासक विम-कडफिसस बना, जो इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक ''कनिष्क'' था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक् संवत् प्रारम्भ किया।
- इसने अपनी राजनीतिक राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी तक्षशिला को बनाया बाद में सांस्कृतिक राजधानी मथुरा (मंधूसा) को बनाया।
- कनिष्क ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का ''भिक्षा-पात्र'' तथा यहाँ के दार्शनिक अश्व-घोष को अपने साथ लेता गया। इसी अश्वघोष को कनिष्क ने अपने राज कवि का दर्जा दिया।
- कनिष्क बौद्ध विद्वान पार्श्व के कहने पर कश्मीर के कुंडल वन में चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन का आयोजन प्रथम सदी में करवाया था। इस बौद्ध सम्मेलन में अध्यक्ष के साथ साथ उपाध्यक्ष की भी व्यवस्था की गई। अध्यक्ष पद पर वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष पद पर अश्वघोष को बैठाया गया।

➢ **इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखा में बंट गया है–**

1. हीनयान एवं
2. महायान।

- कनिष्क महायान शाखा को मानता था।
- कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- अश्वघोष ने बुद्ध-चरित्र लिखा।
- चरक ने चरक-संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र में सापेक्षता के सिद्धांत की चर्चा की है। अत: इन्हें भारत का आइंस्टिन कहते हैं।
- नागार्जुन बौद्ध धर्म के 'शून्य वाद' को जानते थे।
- वसुमित्र नामक विद्वान ने महाविभाष सूत्र के रचना किया। जिसे बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहा जाता है।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्क के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ति पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- कनिष्क के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- कनिष्क के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलिप्ति बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा एवं कल्याण बंदरगाह प्रमुख थे।
- अज्ञात की रचना ''पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी'' (POAS) से यह जानकारी मिलती है कि कनिष्क का सर्वाधिक व्यापार रोम से होता था।
- कनिष्क के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय अरब नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की। मानसून अरबी भाषा का शब्द मौसीम से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ होता है मौसम के अनुरूप पवन की दिशा।
- कनिष्क को द्वितीय अशोक कहा जाता है।
- 105 ई. (लगभग) में कनिष्क की मृत्यु हो गई।
- इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

रेशम मार्ग (Silk Route)

- यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।
- इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग कश्मीर तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- कनिष्क ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था। यह मार्ग चीन के क्षेत्राधिकार में आता था।
- कौशेय शब्द का प्रयोग रेशम के लिए किया गया है।
- रेशम मार्ग आम तौर पर वह स्थलीय मार्ग कहलाता है जिसे चीन के हान राजवंश के महान यात्री यांगछयान ने खोला था। जो हान वंश की राजधानी छागआन से पश्चिम में रोम तक जाता था।
- रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्क कर (Tax) लेता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।

11. गुप्त काल (Gupta Period)

- इस वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- गुप्त शासक वैश्य थे। यह विष्णु उपासक थे।
- ऐसा माना जाता है कि ये कुषाण शासकों के सामंत थे।
- इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने ''राजा-रानी'' प्रकार का सिक्का चलाया।

समुद्रगुप्त

- यह चंद्रगुप्त–I का पुत्र था।
- यह कुमार देवी का पुत्र था। अत: यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- इसके बचपन का नाम कांच था।
- समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तारवादी थी। अत: यह अशोक के विपरीत था।
- इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे कर वसूलता रहा।
- इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त की तुलना ''नेपोलियन'' से की जाती है। इसलिए बी.ए. स्मिथ द्वारा समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा गया। जो Early History of India की पुस्तक में लिखा हुआ है।
- समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी ''प्रयाग प्रशास्ति'' अभिलेख (इलाहाबाद) से मिलती है।
- यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा समुद्र तीन का पानी पीता था, अर्थात समस्त दक्षिण भारत समुद्रगुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा और अनुमति मांगी।
- समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दिया।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।
- इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक ''वेश-भूषा'' में दिखाया गया है।
- समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।
- समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- यह एक अयोग्य शासक था।
- इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच कर खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक ''देवी चंद्रगुप्तम्'' में मिलती है।

चंद्रगुप्त-II

- इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- इसे शक विजेता भी कहा जाता था।
- इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें ''नवरत्न'' कहा जाता था।
- नवरत्न में सबसे प्रमुख कालिदास (संस्कृत लेखक), अमरदास (कवि), वराहमिहिर (खगोलविद्), धनवंतरि (आयुर्वेदाचार्य) आदि दरबार में थे।
- चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- इसने अपनी यात्रा विवरण ''फो-क्यू-की'' है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- इसे महायान शाखा का **ऑक्सफोर्ड** कहा जाता है।
- विश्व का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षशिला' विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- विश्व का पहला छात्रावास की सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय 'नालंदा विश्वविद्यालय' था।
- 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।

- कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।
- स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुणों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- भानु गुप्त के 'एरण' अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- इस वंश के विनाश का कारण हुणों का आक्रमण था।
- हुण आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतो में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति थे।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय की भी सर्वोच्च था।
- शासन की सबसे छोटे इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- अजंता की गुफा बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गई।
- गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आंतकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

सुदर्शन झील

क्र. सं.	राजा	कार्य	राज्यपाल
1.	चंद्रगुप्त मौर्य	निर्माण	पुष्यमित्र वैश्य
2.	अशोक	जीर्णोद्धार	तुसास्प
3.	रूद्रदामन	जीर्णोद्धार	सुविशाख
4.	स्कंदगुप्त	जीर्णोद्धार	पर्णदत्त

पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश

- इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक प्रभाकर वर्धन था।

➢ **प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं–**

1. राजवर्धन 2. हर्षवर्धन एवं 3. राजश्री।

- राजश्री का विवाह कन्नौज के राजा गृहवर्मन से हुआ।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने गृहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- राजवर्धन ने देवगुप्त की हत्या कर दी।
- गौड़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दिया। साथ ही इसने बोधि वृक्ष को भी कटवा दिया।
- वर्तमान बोधि वृक्ष छठी पीढ़ी की है।
- शशांक शैव धर्म का अनुयायी था।
- हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।

➢ **हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी–**

1. राजश्री का पता लगाना
2. साम्राज्य को संभालना।

- हर्षवधन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
- हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज को राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

➢ **हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की–**

1. नागानंद
2. रत्नावली
3. प्रियदर्शिका।

- हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।

➢ **इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की–**

1. कादम्बरी
2. हर्षचरित्र।

- हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता था।
- हर्षवर्धन को भारत का अंतिम हिंदु सम्राट माना जाता है।
- इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।
- इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का प्रमुख केन्द्र था।
- इसके समय चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- 629 ई. में जब ह्वेनसांग भारत आया था तब नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- 'सी-यू-की' की रचना ह्वेनसांग द्वारा किया गया था।
- इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (Student) तथा अध्यापन (Teaching) का कार्य किया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए 100 गांवों की आय हर्षवर्धन ने दान के रूप में दिया।

- ☞ ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- ☞ कुम्भ मेला का प्रारंभ हर्षवर्धन के द्वारा ही माना जाता है।
- ☞ हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु वह बौद्ध धर्म के महायान शाखा से प्रभावित था।
- ☞ हषर्वर्धन के समय उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर कन्नौज था।
- ☞ इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे 5वीं बौद्ध संगीति भी कहते हैं।
- ☞ हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- ☞ हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत का अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- ☞ इसकी जानकारी पुलकेशिन द्वितीय का कर्नाटक में स्थित 'एहोल' अभिलेख से मिलती है।
- ☞ 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- ☞ हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- ☞ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति में आ गई।
- ☞ इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को ''युग-परिवर्तन'' का काल कहते हैं।
- ☞ हर्षवर्धन अंतिम बौद्ध राजा था जो संस्कृत का महान विद्वान था।
- ☞ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर यशोवर्मन का शासन हुआ।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

12. दक्षिण भारत
(South India)

संगम काल

- 100 ई. से 250 ई. के मध्य दक्षिण भारत में पांड्य राजाओं के संरक्षण के कवियों के 3 विशाल सम्मेलन बुलाए गए। इन सम्मेलन को ही तमिल भाषा में संगम कहते हैं।
- इन्हीं कवियों के द्वारा सभा में कई तमिल साहित्य की रचना की गई। इन्हीं तमिल साहित्य को संगम साहित्य भी कहा जाता है।

➢ **इतिहास में 3 संगमों का वर्णन मिलता है–**

1. प्रथम संगम
- यह दक्षिणी मदुरै में आयोजित हुआ था।
- इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
- इस सम्मेलन में 89 राजाओं ने भाग लिया।
- वर्तमान में दक्षिणी मदुरै जलमग्न हो गया है। जिस कारण इस संगम में लिखे गए साहित्य की कोई जानकारी नहीं है।

2. द्वितीय संगम
- यह कपाटपूरम (अलैव) में आयोजित हुआ था।
- प्रारंभ में इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की किन्तु बाद में ''तोलकापिय्यर'' ने की।
- इसी सम्मेलन में ''तोलकापिय्यर'' ने ''तोलकापिय्यम'' नामक तमिल साहित्य की रचना की।
- इस संगम में 59 राजाओं ने हिस्सा लिया।

3. तृतीय संगम–
- इसकी अध्यक्षता ''नक्किरर'' ने किया।
- इसमें 49 राजाओं ने हिस्सा लिया।
- इस संगम में लिखे गए साहित्य का भी कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।
- यह उत्तरी मदुरै में आयोजित हुआ था।

Note :–

1. तीनों ही सम्मेलन तमिलनाडु में किए गए हैं।

2. अगस्त्य ऋषि (काशी) बनारस के रहने वाले थे जो तमिलनाडु में बस गए।

- अगस्त्य ऋषि को तमिल साहित्य का जनक माना जाता है।
- पांड्य राजाओं के द्वारा इन संगमो को शाही संरक्षण प्रदान किया गया।

संगम काल के राज्य

- कृष्णा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।

1. चोल
2. चेर
3. पांड्य।

चोल वंश

- इसके बारे में प्रथम जानकारी पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
- इसकी प्रथम राजधानी 'उरई-ऊर' थी।
- इसकी मुख्य राजधानी तंजौर (तमिलनाडु) में स्थित था।
- इनका राजकीय चिन्ह बाघ था।
- उरई-ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व प्रसिद्ध था।
- ऐसा कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र साँप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
- चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था। जिस कारण कहा जाता है कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर उतना अनाज उगाया जा सकता है जिससे 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक करिकाल था। इसने श्रीलंका को जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वार लाया और कावेरी नदी पर 160 m लंबा बाँध बनवाया।
- यह भारत का पहला बाँध था। इसे Grand बाँध कहते है।
- 8वीं सदी में पुन: चोलों का उदय हुआ।

चेर वंश

- ऐतरैय ब्राह्मण ग्रंथ में इसे चेरापद कहा गया है।
- अशोक के द्वितीय शिलालेख में इसे केरलपुत्र कहा गया है।
- इनका क्षेत्र केरल (मालाबार) में था।
- चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जेरल था।
- इनकी राजधानी बंजी/करूर थी।
- इनका राज्य चिह्न धनुष था।
- उदियन जेरल ने महाभारत युद्ध के सैनिकों के लिए भोज करवाया था।
- अगला शासक शेनगुट्टवन था, इसे लाल-चेर भी कहते हैं।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शेनगुट्टवन था।
- शेनगुट्टवन ने पत्नीपूजा (कण्णगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।

- इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।

पांड्य वंश

- इसकी राजभाषा तमिल थी।
- यह मातृ सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- पांड्य राजाओं ने ही तीनों संगम का अयोजन करवाया था।
- पांड्य वंश की प्रथम जानकारी मेगास्थनीज की पुस्तक 'इण्डिका' से मिलती है।
- पांड्य वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- इनकी राजधानी मदुरै थी।
- इनका राजकीय चिन्ह मछली (कार्प) था।
- पांड्य वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेडूजेलियन था।
- इसने 290 ई. में हुए 'तलैयालंगानम'' के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- 5वीं सदी आते-आते पाण्ड्य वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- पांड्य वंश के राजाओं का रोम के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत रोम के राजा आगस्टसा के दरबार में भेजा था।
- पांड्य वंश की राजधानी मदुरै को त्योहारों का शहर कहते हैं।
- यहाँ का मीनाक्षी मंदिर विश्व-प्रसिद्ध हैं।
  - (i) चेर-बंदरगाह → बंदर-चेर, मुजरिस
  - (ii) चोल-बंदरगाह → पुहार तथा उरई
  - (iii) पांड्य-बंदरगाह → शालीयूर एवं कोरकाय

➢ **संगम कालीन साहित्य**

- संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
- इन्हें तमिलकम या द्रविड़ साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।
  - **(i) तोलकाप्पियम–** इसका संबंध व्याकरण से है। इसकी रचना तोलकाप्पियर ने की थी।
  - **(ii) तिरुक्कूराल या कूराल–** इसे तमिल साहित्य का बाईबील (एंजिल) कहते हैं।
  - **(iii) जीवक चिन्तामणि–** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसकी रचना तिरूत्क्कदेवर ने की है।
  - **(iv) शिल्पादिकारम–** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें नुपूर (पायल) की कहानी है। इसे तमिल काव्य का इलियट भी कहा जाता है। इसकी रचना इलांगोआदिगल ने की थी।
- राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्वी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धन को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेचकर वे मदुरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदुरै की रानी की पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दे दी गई।
- कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदुरै शहर नष्ट हो गया।
  - **(v) मणिमेखले–** इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोलवन तथा माध्वी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंतत: बौद्ध धर्म अपना लिया था। इसकी रचना शीतलैशत्नार द्वारा किया गया था। इसे तमिल काव्य की ओडिशी भी कहा जाता है।

चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

➢ **सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी–**

(i) वातापी/बादामी, (ii) कल्याणी एवं (iii) बेंगी।

चालुक्य (वातापी/बादामी)

- वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।
- इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे। जिसके बारे में जानकारी कैरा ताम्रपत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।
- इन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक था। जिसके बारे में जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है।
- इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोंड की उपाधि धारण कर लिया।
- पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीतकर वातापीकोंड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशिन-II की हत्या कर दी।
- इसके अतिरिक्त इन्होंने वातापी में स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के दीवार पर अपना एक अभिलेख खुदवाया।
- पुलकेशिन-II के दरबार में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।
- पुलकेशिन-II ने ईरान के राजा खुसरो-II के दरबार में अपना एक दूत मंडल भेजा था।
- पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
- इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II था।
- कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।

कल्याणी का चालुक्य

- चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक तैलप–II था। इसकी राजधानी मानखेट थी।
- इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- इन्होंने विक्रमांकदेव चरित नामक पुस्तक लिखी।
- इसके दरबार में मिताक्षर के लेखक विज्ञानेश्वर रहते थे। मिताक्षरा का संबंध हिन्दू कानून से था।
- इस वंश का राजचिन्ह् वाराह (सुअर) था।
- इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर–IV थे।

बेंगी का चालुक्य

- यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- इस वंश की राजधानी बेंगी (आंध्रप्रदेश) थी।
- इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

पल्लव वंश

- इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- इस वंश की राजधानी कांची थी।
- यह दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच का प्रदेश था।
- इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुन: पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- इसके दरबार में दण्डी नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दासकुमार चरितम् नामक पुस्तक संस्कृत भाषा में लिखी।
- इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।

चोल वंश (9वीं सदी) तंजौर

- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं। इन्होंने नर केसरी की उपाधि धारण की थी।
- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- इन्होंने अपनी राजधानी तंजौर/तंजावुर को बनाया।
- 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया। इन्होंने कोदंडराम की उपाधि धारण किया था।
- चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदूरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली। इसकी जानकारी उतरमेरूर अभिलेख से मिलती है।
- परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III ने तक्कोलम् के युद्ध में पराजित कर दिया।
- चोल वंश का अगला शासक राजाराज बना। इनका मूल नाम अरिमोलीवर्मन था।
- इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली। किन्तु इन्होंने श्रीलंका को चोल साम्राज्य में शामिल नहीं किया।
- अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया और गंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया।
- इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया। राजेन्द्र प्रथम अरब सागर में स्थित सदिमन्तिक नामक द्वीप पर भी अधिकार कर लिया।
- इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- चोल काल की स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।

- चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- द्रविड़ शैली को विमानम् शैली भी कहते हैं।
- विमानम् शैली का प्रथम उपयोग तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में किया गया।
- चोल काल में निर्मित नटराज प्रतिमा सांस्कृतिक धरोहर था।
- चोल काल को तमिल भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न के रूप में कंबन, ओट्टककुट्टन एवं पुगलेन्दी थे।
- कंबन ने तमिल रामायण की रचना किए।

राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन-II को हराकर राष्ट्रकूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-I था। जिसने महाराष्ट्र में एलोरा के कैलाश मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- इस वंश का अगला शासक अमोघवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी तथा जिनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- शांतिपुराण की रचना पोन्न द्वारा किया गया था।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-III बना। इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुन: स्थापना कर दी।
- तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

पाल वंश (7वीं-11वीं)

- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे।
- पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के अनुयायी थे।
- पाल वंश बिहार-बंगाल के क्षेत्र में था।
- पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- उन्होंने बिहारशरीफ (नालंदा) में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- पाल वंश का अगला शासक धर्मपाल था।
- इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रूक गया।
- धर्मपाल ने भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
- इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
- महिपाल ने पाल वंश का विकास पुन: प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- इसने आदि दीपंकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में वज्रयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
- पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया।
- पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

सेन वंश

- इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे।
- सेन वंश की राजधानी लखनौती (नदिया), बंगाल में थीं।
- इस वंश का अगला शासक विजय सेन था।
- अगला शासक लक्ष्मण सेन बने।
- इनके दरबार में जयदेव नामक विद्वान रहते थे।
- जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।
- लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- परमभागवत् की उपाधि लक्ष्मण सेन ने धारण की थी।
- लक्ष्मणसेन सेन वंश का प्रथम शासक था जिसने अपना अभिलेख हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया था। इससे पहले अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखा जाता था।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में हुई थी।
- इस वंश के संस्थापक नागभट्ट-I थे।
- नागभट्ट–I ने मालबा के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।
- इस वंश का दूसरा सबसे प्रभावशाली शासक वत्सराज था और इसी ने कन्नौज के लिए त्रिस्तरीय संघर्ष में भाग लिया और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।

- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दीं।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।

चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जेजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है।
- इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली) को जन्म दिया।
- बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी है।
- इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- इस वंश का अगला शासक "धंग" था। यह शिव को मानता था।
- इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसे कंदरिया महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की प्रतिमा है।
- राजा धंग ने जिन्नाथ, विश्वनाथ और वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक **राज्यपाल** की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर से भाग गया।
- विद्याधर अकेला ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- इस वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव था, जिसे पृथ्वीराज चौहान-III ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।
- आल्हा रूदल दोनों भाई परमर्दिदेव का सेनापति था जो पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते समय उनकी मृत्यु हो गई।

कुछ छोटे राजवंश

पूर्वी गंग वंश

- यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पूरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

काकतिया वंश (तेलंगाना)

- यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- इसके संस्थापक बीटा प्रथम थे।
- इस वंश का अगला शासक रूद्र प्रथम बना। इसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक प्रतापरूद्र देव था, जिसके शासन काल में मलिक काफूर ने आक्रमण किया।
- इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन खिलजी के दरबार में भेंट किया।
- इसके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- इस वंश पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

होयशल वंश

- ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेविड) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्मन थे।
- इन्होंने वेल्लूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक वीरवल्लाल तृतीय था। जिसे मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

कश्मीर का इतिहास

- कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी संस्कृत के कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।

राजतरंगिणी

- यह ऐसा संस्कृत साहित्य है जिसमें क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लिखने का पहली बार प्रयास किया गया।
- लोहार वंश का हर्ष स्वयं एक कवि था और कई भाषाओं एवं विद्याओं का ज्ञाता भी था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
- इस वंश का अंतिम शासक जयसिंह था।
- इन्हीं के काल में "राजतरंगिणी' पुस्तक पूर्ण हुई थी।
- इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।
- यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनूल-आबे-दीन' थे।
- इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

मूर्तिकला तथा मंदिर निर्माण की शैली

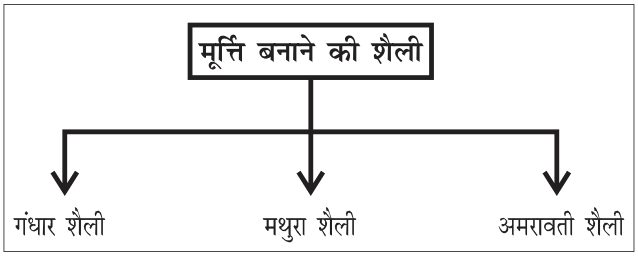

शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	ग्रुप	कहानी

स्थापत्य कला

- ☞ भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।
- ☞ भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।
- ☞ मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

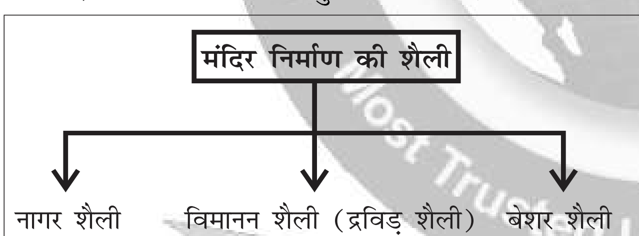

(i) नागर शैली– नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं।

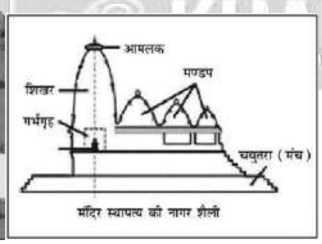

- ☞ यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं।
- ☞ नागर शैली की मंदिर का जो गुबंद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुबंद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था।
- ☞ नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली भी कहा जाता था।
- ☞ इस मंदिर के चारों ओर चारदीवारी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है और मंदिर में कोई भव्य द्वार नहीं होता था।
- ☞ एक शाखा गुजरात में भी है जिसे सोलंकी शैली कहते हैं।

(ii) विमानन शैली/द्रविड़ शैली– द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे।

- ☞ ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं।
- ☞ दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इसलिए इस शैली में निर्मित मंदिर के आस-पास तालाब होते थे।
- ☞ यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पूरे दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मुख्य द्वार होते थे। जिसे हमलोग गोपुरम या गोपुरा कहते थे।
- ☞ मुख्य द्वार के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी।
- ☞ यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था।
- ☞ मंदिर बीच में रहती थी इस शैली की मंदिर सीढ़ीनुमा होती थी और सीढ़ीनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था।

(iii) बेसर शैली– यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है।

- ☞ यह शैली विंध्य से लेखकर कृष्णा नदी तक मिलता है।
- ☞ इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसज्जित होता है।

राजपूत काल (पूर्वमध्यकाल) (800ई.-1200ई.)

- राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक ''पृथ्वीराज रासो'' से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं–
  (i) प्रतिहार
  (ii) परमार
  (iii) चालुक्य
  (iv) चौहान

(i) प्रतिहार

- पीछे पढ़ चुके हैं।

(ii) परमार वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- अंतत: इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक मूल राज थे।
- इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलशाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- महमूद गजनवी ने भीम-I के काल मे ही सोमनाथ मंदिर को लूटा था।
- भीम प्रथम के सेनानायक विमलशाह ने माउंट आबू पर प्रसिद्ध दिलवाड़ा का जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हराया था।
- यह मोहम्मद गोरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- अंतत: इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

चौहान वंश

- इस वंश का उदय जंगल देश में हुआ जिसे बाद में सपादलक्ष (सवा लाख गांव)कहा गया। जिसकी राजधानी अहिक्षत्रपुर थी।
- इस वंश के संस्थापक वासुदेव (सिंह राज) थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक अरूणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रहराज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा था।
- इस वंश के अगले शासक पृथ्वीराज-III (चौहान) थे।
- पृथ्वीराज चौहान को रामपिथौरा भी कहा जाता है।
- पृथ्वीराज–III (चौहान) के पिता सोमेश्वर तथा माता (संरक्षिका) कर्पूरी देवी थी जो त्रिपुरी के कल्चूरी राजा अचलराज की पुत्री थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में जयानक, चन्दबरदाई, विश्वरूप, वागीश्वर, जनार्दन, विद्यापति गौड, आशाधार तथा पृथ्वीभट्ट आदि विद्वान रहते थे।
- चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ की रचना किया।
- इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई०) में मोहम्मद गोरी को पराजित कर दिया।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पृथ्वीराज-III (चौहान)एक दूसरे के विरोधी हो गए।
- जयचंद्र ने मोहम्मद गोरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192 ई०) में पृथ्वीराज-III (चौहान) की हत्या कर दी।
- तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक घटना थी।
- मोहम्मद गोरी ने 1194 ई० में चंदावर के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता का अंत कर दिया।

❑❑❑